* श्रीगणेशाय नमः *

श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत

कवितावलीरामायण

अथ बालकाण्ड प्रारम्भ

* सवैया *

अवधेश के द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति
[illegible] । अवलोकिहौं शोचविमोचन को
[illegible] रही, जो न ठगे धिक से ॥ तुलसी मन,
[illegible] रञ्जित अञ्जन, नैन सुखञ्जन जात-
[illegible] । सजनी शशि में समशील उभै, नवनील
[illegible]रुह से बिकसे ॥ १ ॥ पगनूपुर औ पहुँची
करकञ्जनि, मञ्जु बनी मणिमाल हिये । नव-
नीलयालेवर पीत झँगा झलकै, पुलकै नृप गोद
राज अरविंद सों आनन, रूपमरन्द अनन्दित

लोचन-भृंग पिये । मनमोंन बस्यो अस बालक
जो, तुलसी जगमें फल कौन जिये ॥ २ ॥
तनकी द्युति श्याम सरोरुह, लोचन कञ्जकी
मञ्जुलताई हरैं । अति सुन्दर सोभित धूरिभरे
छबि भूरि अनङ्ग कि दूरि धरैं ॥ दमकैं दँतियाँ
द्युति दामिनि ज्यों, किलकैं कल बालविनोद
करैं । अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी
मनमन्दिर में बिहरैं ॥ ३ ॥ कबहूँ ससि माँगत
आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं । कबहूँ
करताल बजाइ कै नाचत, मातु सबै मनमोद
भरैं ॥ कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकै, पुनि लेत
सोई ज्यहि लागि अरैं । अवधेश के बालक चारि
सदा, तुलसी मनमन्दिर में बिहरैं ॥४॥ बरदन्त
कि पङ्गति कुन्दकली, अधराधर पल्लव खोलन
की । चपला चमकै घनबीच, जगै छबि मोतिन
माल अमोलन की ॥ घुँघुरारि [illegible] हठि
मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलनये ॥ [illegible] सो

छावरि प्राण करै तुलसी, बलिजाउँ लला इन बोलन की ॥ ५ ॥ पदकञ्जनि मञ्जु बनी पनहीं, धनुहीं शर पङ्कजपाणि लिये । लरिका सँग खेलत डोलत हैं, सरयूतट चौहट हाट हिये ॥ तुलसी अस बालक सों नहिं नेह, कहा जप योग समाधि किये । नर वे खर शूकर श्वान समान, कहौ जगमें फल कौन जिये ॥ ६ ॥ सरयू बर तीरहि तीर फिरैं, रघुबीर सखा अरु बीर सबै । धनुहीं कर तीर, निषङ्ग कसे कटि, पीत दुकूल नवीन फबै ॥ तुलसी तेहि औसर लावनिता' दश चारि नौ तीन इकीस सबै । मति भारति पंगु भई जो निहारि, बिचारि फिरी उपमा न फबै ॥ ७ ॥

* घनाक्षरी *

क्षोणी में के क्षोणीपति छाजै जिन्हैं छत्र-[illegible], क्षोणी--क्षोणी छाये क्षिति आये निमि-[illegible]के । प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बरबेष बपु,

बरबे को बोले बैदेही बर काज के ॥ बोले बन्दी बिरुद बजाइ बर बाजनेऊ, बाजे बाजे बीर बाहु धुनत समाजके । तुलसी मुदित मन पुर-नर-नारि जेते, बारबार हेरै मुख औध मृगराज कै ॥८॥ सीयके स्वयम्बर समाज जहाँ राजन को, राजनि के राजा महाराजा जानै राम को । पवन पुरन्दर कृशानु भानु धनद से, गुण के निधान रूप धाम शोभा कामको ॥ बान बलवान यातुधानप सरीखे शूर, जिनके गुमान सदा सालिम संग्राम को । तहाँ दशरत्थ के समर्थ नाथ तुलसी के, चपरि चढ़ायो चाप चन्द्रमा ललाम को ॥ ९ ॥ मयनमहन पुरदहन गहन जानि, आनिकै सबै को सार धनुष गढ़ायो है । जनक सदसि जेते भले भले भूमि-पाल, क्रिये बलहीन बल आपनो बढ़ायो है ॥ कुलिश कठोर कूर्मपीठि ते कठिन अति, [illegible] न पिनाक काहू चदरि चढ़ायो है । [illegible] ॥ सो

राम के सरोजपाणि परसत ही, टूट्यो मानो बारेते पुरारिही पढ़ायो है ॥ १० ॥

* छप्पय *

डिगति उर्वि अति गुर्वि, सर्वि पब्वै समुद्रसर। ब्याल बधिर तेहि काल, विकल दिगपाल चराचर ॥ दिग्गयन्द लरखरत, परत दशकन्ध मुखभर। सुरबिमान हिमभानु, भानु संघटित परस्पर॥ चौंके विरञ्चि शंकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यो ॥ ब्रह्माण्ड खण्ड कियो चण्डधुनि, जबहिं राम शिवधनु दल्यो ॥ ११ ॥

* घनाक्षरी *

लोचनाभिराम घनश्याम राम रूप शिशु, सखी कहै सखी सों तू प्रेमपय पालिरी। बालक नृपालजू के ख्यालही पिनाक तोऱ्यो, मण्डलीक मण्डली प्रतापदापदालिरी ॥ जनक को सिया को हमारो तेरो तुलसी को, सबको भावतो ह्वै है मैं जो कह्यो कालिरी। कौशला की कोखि परतोषि

तन वारियेरी, राय दशरत्थ की बलैया लीजै आलिरी ॥ १२ ॥ दूब दधि रोचन कनकथार भरि भरि, आरती सँवारि बरनारि चलीं गावती। लीन्हें जयमाल करकञ्ज सोहैं जानकी के, पहिराओ राघौ जी को सखियाँ सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनक नगर जन, झाँकतीं झरोखे लागीं शोभा रानी पावतीं। मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निज निज नीड़, चन्दकी किरण पीवैं पलकौ न लावतीं ॥ १३ ॥ नगर निशान बर बाजैं व्योम दुन्दभी, विमान चढ़ि गान कै कै सुरनारि नाचहीं ॥ जैति जय तिहूँ पुर जयमाल राम उर, बरषैं सुमन सुर रूरेरूप राचहीं। जनक को पन जयो सबको भावतो भयो, तुलसी मुदित रोम रोम मोद माचहीं ॥ साँवरो किशोर गोरी शोभा पर तृण तोरी जोरी जियो युग युग युवती जन याँचहीं ॥ १४ ॥ भले भूप कहत भले भदेस पनिभू

सों लोकलखि बोलिये पुनीत रीति मारषी। जगदम्बा जानकी जगत पितु रामभद्र, जानि जिय जोहौ जो लगै न मुँह कारषी ॥ देखे हैं अनेक ब्याह सुने हैं पुराण वेद, बूझे हैं सुजान साधु नरनारि पारषी। ऐसे सम समधी समाज न बिराजमान, रामसे न वर दुलही न सीयसारषी ॥ १५ ॥ बाणी बिधि गौरी हर शेषहूँ गणेश कही, सही भरी लोमश भुशुंडि बहु बारिषो। चारिदश भुवन निहारि नरनारि सब, नारद को परदा न नारद सो पारिषो ॥ तिन्ह कही जगमें जगमगाति जोरी एक, दूजी को कहैया को सुनैया चष चारिषो। रमा रमारमण सुजान हनुमान कही, सीयसी न तीय न पुरुष राम सारिषो ॥ १६ ॥

* सवैया *

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दरमंदिर माहीं। गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि, वेद

जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं ॥ राम का रूप निहा-रति जानकि कंकन के नगको परछाहीं । याते सबै सुधि भूलिगई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं ॥ १७ ॥

* घनाक्षरी *

भूपमंडली प्रचंड चंडीश कोदंड खंड्यो, चंड बाहु दंड जाको ताही सों कहतु हौं । कठिन कुठार धार धरिबे की धीरताहि, बीरता बिदित ताकी देखिये चहतु हौं ॥ तुलसी समाजराज तजि सो बिराजै आजु, गाज्यो मृगराज गजराज ज्यों गहतु हौं । क्षोणी में न छाँड्यो छप्यो क्षोणिप को छौना छोटो, क्षोणिप छपन बाँको विरुद बहतु हौं ॥ १८ ॥ निपटि निडरि बोले वचन कुठार-पाणि, मानि त्रास औनिपन मानो मौनता गही रोखै माखै लषण अकनि अनखोहीं बातैं, तुलसी विनीत वाणी बिहँसि ऐसी कही ॥ सुयश तिहारे भरे भुवननि भृगुनाथ, प्रगट प्रताप

आपु कह्यो सो सबै सही। टूट्यो सो न जुरैगो शरासन महेशजू, को रावरी पिनाक में सरीकता कहाँ रही॥ १९ ॥

* सवैया *

गर्भ के अर्भक काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको। सोई हौं बूझत राजसभा धनुकै दलिहै दलिहौं बल ताको॥ लघु आनन उत्तर देत बड़े, लरिहै मरिहै करिहै कछु शाको। गोरो गरूरे गुमान भर्‌यो कहु कौशिक छोटो सो ढोटो है काको॥ २० ॥

* घनाक्षरी *

मख राखिबे के काज राजा मेरे संग दये, दले यातुधान जे जितैया बिबुधेश के। गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी, लोचन अतिथि भये जनक जनेशके॥ चंडबाहु दंड बल चंडीश कोदंड खंड्यो, ब्याही जानकी जीते नरेश देश देश के। साँवरे गोरे शरीर

धीर महाबीर दोऊ, नाम राम लषण कुमार कोशलैश के ॥ २१ ॥

* सवैया *

कालकराल नृपालन के धनुभंग सुने फरसा लिये धाये । लक्ष्मण राम बिलोकि सप्रेम महारिसिहा फिरि आँखि दिखाये ॥ धीर शिरोमणि बीर बड़े बिनयी बिजयी रघु-नाथ सुहाये । लायक हैं भृगुनाथ से धनु-शायक सौंपि सुभाय सिधाये ॥ २२ ॥

इति बालकाण्ड समाप्त ॥ १ ॥

अथ अयोध्याकाण्ड प्रारम्भ

* सवैया *

कीर के कागर ज्यों नृपचीर विभूषण उप्पम अंगनि पाई । औध तजो मगबासके रूख ज्यों पंथके साथ ज्यों लोग लुगाई ॥ सङ्ग सुबंधु पुनीत प्रिया मनो धर्मक्रिया धरि देह सुहाई । राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई ॥ १ ॥ कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई । मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाइ भले दिन द्वै जनु औधहुते पहुनाई । राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई ॥ २ ॥

* घनाक्षरी *

शिथिल सनेह कहैं कौशिला सुमित्राजी सों, मैं न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है । कहैं मोहिं मैया कहौं मैं न मैया भरत

की, बलैया लैहौं भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरलभाय रघुराय माय मानी, काय मन बानीहूँ न जानिकै मतेई है । बाम विधि मेरो सुख सिरस सुमनसम, ताको छलछुरी कोह कुलिशलै टेई है ॥३॥ कीजै कहा जीजीजू सुमित्रा परिपाँय कहैं, तुलसी सहावै विधि सोई सहियतु है । रावरे सुभाय रामजन्मही ते जानियत, भरत की मातु को कीबो साचियतु है ॥ जाई राज घर ब्याह आई राजघर महाराज, पूत पायेहू न सुख लहियतु है । देह सुधागेह तेऊ मृगहू मलीन कियो ताहूपर बाहु बिन राहु गहियतु है ॥ ४ ॥

* सवैया *

नाम अजामिल से खल कोटि अपार नदी भव बूड़त काढ़े । जो सुमिरे रज मेरु शिलाकन होत अजाखुर बारिधि बाढ़े ॥ तुलसी जिनके पदपङ्कज ते प्रकटी तटनी जो हरै अघ गाढ़े । ते प्रभु या सरिता तरिबे कहँ माँगत नाव

करारे ह्वै ठाढ़े ॥ ५ ॥ यहि घाटते थोरिकदूरि अहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू । परसै पग धूरि तरै तरणी घरणो घर का समुझाइहौं जू ॥ तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका केहिभाँति जिआइहौं जू । बरु मारिये मोहिं बिना पगधोये हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू ॥ ६ ॥ रावरे दोष न पाँयन को पगधूरि को भूरि प्रभाव महा है । पाहन ते बनबाहन काठ को कोमल है जल खाइ रहा है । पावन पाँय पखारिकै नाव-चढ़ाइ हौं आयसु होत कहा है । तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकि ओर हहा है ॥ ७ ॥

* घनाक्षरी *

पातभरी सहरी सकल सुत बारेबारे, केवट की जाति कछू बेद न पढ़ाइहौं । सब परिवार मेरो याहीलागि राजाजी, हौं दीन बित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं ॥ गौतम की घरणीज्यों तरणी

तरैगीमेरी, प्रभु सों निषाद ह्वैके बाद न बढ़ाइहौं। तुलसीके ईश राम रावरे सों साँची कहौं, बिना पग धाये नाथ नाव न चढ़ाइहौं ॥८॥ जिनको पुनीत बारि शिरसि वहैं पुरारि, त्रिपथ-गामिनी यश वेद कहैं गाइकै। जिनको योगीन्द्र मुनिबृन्द देव देह-धरि, करत बिबिध योग जप मनलाइकै ॥ तुलसी परसि धूरि जिनकी, अहल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौनो सो लेवाइकै। तेई पाँय पाइकै चढ़ाय नाम धोये बिनु, ख्वैहौं न पठावनी कै ह्वैहौं न हँसाइकै ॥९॥ प्रभुरुख पायकै बोलाइ बाल घरनि को, बन्दिकै चरण चहुँदिशि बैठे घेरि घेरि। छोटो सो कठौता भरि आनि पानि गङ्गाजूको, धोइ पाँय पियत पुनीत बारि फेरि फेरि ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानु-राग सुर, बरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि। बिबुध सनेहसानी बाणी असयानी सुनि, हँसे राघौ जानकी लषनतन हेरि हेरि ॥ १० ॥

* सवैया *

पुरते निकसी रघुबीर बधू धरि धीर दये मग में डग द्वै। झलकीं भरि भाल कनी जलकी पुट सूखिगये मधुराधर वै॥ फिर बूझति है चलनोब कितो पिय पर्णकुटी करिहौ कित वै। तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥११॥ जलको गये लक्ष्मण हैं लरिका परिखौ पियछाँह घरीक ह्वै ठाढ़े। पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पाँय पखारिहौं भूभुरिडाढ़े॥ तुलसी रघुबीर प्रिया श्रम जानि-कै बैठि बिलम्ब सों कंटक काढ़े। जानकीनाह को नेह लख्यो पुलको तन बारि बिलोचन बाढ़े॥ १२॥ ठाढ़े हैं नौद्रुम डार गहे धनु काँधे धरे कर शायक लै। बिकटी भृकुटी बड़री अँखियाँ अनमोल कपोलन की छबि है॥ तुलसी अस मूरति आनि हिये जड़डारुधौं प्राण निछावर-

रिकै । श्रम सीकर साँवरि देह लसै मानो राशि महातम तारकमै ॥ १३ ॥

*** घनाक्षरी ***

जलजनयन जलजानन जटा हैं शिर, यौवन उमंग अंग उदित उदार हैं । साँवरे गोरेके बीच भामिनी सुदामिनीसी, मुनिपट धरे उर फूलनि-के हार हैं ॥ करनि शरासन शिलीमुख निषङ्ग कटि, अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं । तुलसी विलोकि कै त्रिलोकके तिलक तीनि, रहैं नरनारि ज्यों चितेरे चित्रसार हैं ॥ १४ ॥ आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे, काछे मुनिवेष धरे लाजत अनंग हैं । बान बिशिखा-सन बसन बनहीके कटि, कसे हैं बनाइ नीके राजत निषंग हैं ॥ साथ निशिनाथमुखी पाथनाथ नन्दिनीसी, तुलसी बिलोके चितलाइ लैत संग हैं । आनँद उमंग मन यौवन उमंग तन, रूपके उमंग उमंगत अंग अंग हैं ॥ १५ ॥

सुन्दर बदन सरसीरुह सुहाये नैन, मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनिके। अंसनि शरासन लसत शुचि कर शर, तूण कटि मुनिपट लूटकपटनि-के॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटिकै, बिधि बिरच्यो बरूथ बिद्यु तछटनिके। गोरे को बरन देखे सोनो न सलोनो लागे, साँवरे बिलो-के गर्ब घटत घनिके॥१६॥ बल्कल बसन धनु बाण पाणि तूण कटि, रूपके निधान घनदामिनी बरण हैं। तुलसी सुतीय संग सहज सोहाये अंग, नवल कमलहूते कोमल चरण हैं॥ औरै सो बसंत और रति औरै रतिपति, मूरति बिलोके तनमन के हरण हैं। तापस बेषै बनाये पथिक पथै सोहाई, चले लोकलोचननि सुफल करण हैं॥१७॥

* सवैया *

बनिता बनि श्यामल गौरके बीच बिलोकहु री सखि मोहिसी ह्वै। मगयोगन कोमल क्यों चलिहै सकुचाति मही पदपङ्कज छ्वै॥ तुलसी

सुनि ग्रामबधू बिथकीं पुलकीं तन औ चले लोचन च्वै। सब भाँति मनोहर मोहन रूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥१८॥ साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जिति मैन लियो है। बान कमान निषङ्ग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियो है॥ संगलिये विधु वैनी बधू रतिको जिन रञ्चक रूप दियो है। पाँयन तो पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियो है ॥१९॥ रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहनहू ते कठोर हियो है। राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जेहि कान कियो है॥ ऐसो मनोहर मूरति ये बिछुरे कस प्रीतम लोग जियो है। आँखिन में सखि राखिबे योग इन्हैं किमिकै बनबासदियो है॥२०॥शीश जटा उरबाहु बिशाल बिलोचन लाल तिरछीसी भौंहैं। तूण शरासन बाणधरे तुलसी बनमारग में सुठि सोहैं॥ सादर बारहिबार सुभाय चितै तुम्हरो हमरो

मन मोहैं । पूँछत ग्रामवधू सियसों कहु साँवरे से सखि रावरे कोहैं ॥२१॥ सुनि सुंदर बैन सुधारससाने सयानि है जानकी जानि भली । तिरछे करिनैन दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसकाइ चली ॥ तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली । अनुराग तड़ाग में भानु उदै विकसी मनो मंजुल कंज-कली ॥२२॥ धरि धीर कहैं चलु देखिय जाय जहाँ सजनी रजनी रहिहैं । कहिहै जगपोच न शोच कछू फल लोचन आपनतौ लहिहैं ॥ सुखपाइ हैं कान सुने बतियाँ कल आपुस में कछु पै कहिहैं ॥ तुलसी अति प्रेमलगी पलकैं पुलकी लखि राम हिये महिहैं ॥२३॥ पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाये । करबाण शरासन शीशजटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥ जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ।

यहि मारग आजु किशोर बधू बिधुबैनि समेत सुभाय सिधाये ॥२४॥ मुखपंकजकंज बिलोचन मंजु मनोज शरासनसी बनि भौंहैं। कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥ तुलसी कटितूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टिपरी तिरछो हैं। केहि भाँति कहौं सजनी तोहि सों मृदुमूरति द्वैनि बसीमन मोहैं ॥२५॥ प्रेमसों पीछे तिरीछे प्रियाहि चितैं चितुदैचलेलैचितचोरै। श्यामशरीर पसेउ लसै हुलसै तुलसी लखिसो मन मोरै ॥ लोचनलोल चलैं भृकुटी कलकाम कमानहुसों तृण तोरै। राजत राम कुरंगके संग निषंग कसे धनु सों शर जोरै ॥ २६ ॥ शर चारिक चारु बनाइ कसे कटिपाणि शरासन शायक लै। बन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छबि सो बरणै किमिकै ॥ अवलोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चितदै। न डगै न भगै जिय जानि शिलीमुख पंच

धरे रतिनायक है ॥२७॥ बिन्ध्यके बासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे । गौतम-तीय तरी तुलसी सो कथा सुनिभे मुनिबृन्द सुखारे ॥ ह्वै हैं शिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुलकंज तिहारे । कीन्ही भली रघुनायकजू करुणा करि काननको पगुधारे ॥ २८ ॥

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥ २ ॥

अथ आरण्यकाण्ड प्रारम्भ

* सवैया *

पंचवटी बर पर्णकुटीतर बैठे हैं राम सुभाय सोहाये । सोहै प्रिया प्रिय बन्धु लसै तुलसी बस अंग घने छबिछाये ॥ देखि मृगा मृगनैनी कहै प्रिय बैनते प्रीतम के मन भाये । हेमकुरंग के संग शरासन शायक लै रघुनायक धाये ॥१॥

इति आरण्यकाण्ड समाप्त ॥ ३ ॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भ

* घनाक्षरी *

जब अंगदादिनकी मतिगति मन्द भई, पवनके पूतको न कूदिबे को पलुगो। साहसी ह्वै शैलपर सहसा सकेलि आइ, चितवत चहूँ ओर औरन को कलुगो॥ तुलसी रसातलको निकसि सलिल आयो, कोल कलमल्यो अहि कमठ को बलुगो। चारिहू चरणके चपेटचापे चिपटिगो उचकि उचकि चारि अंगुल अचलुगो॥ १॥

इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त॥ ४॥

—*—

अथ सुन्दरकाण्ड प्रारम्भ

* घनाक्षरी *

बासव बरुण बिधि बन ते सुहावनो, दशा-
नन को कानन बसन्त को सिंगारसो। समय
पुराने पात परतडरतबात, पालतलालत रतिमार
को बिहारसो॥ देखे बरबापिका तड़ाग बागको
बनाव, रागबश भो बिरागो पवन कुमारसो।
सीयकी दशा बिलोकि बिटप अशोक तर
तुलसी बिलोक्यो सो तिलोक शोकसारसो॥१॥
माली मेघमाल बनपाल बिकराल भट, नीके
सब काल सींचै सुधासार नीर को। मेघनाद
ते दुलारो प्राण ते पियारो बाग, अति अनुराग
जिय यातुधान धीरको॥ तुलसी सो जानि
सुनि सीय को दरश पाइ, बैठो बाटिका बजाइ
बल रघुबीर को। विद्यमान देखत दशानन को
कानन सो, तहस नहस कियो साहसी समीर को

॥ २ ॥ बसन बटोरि बोरि बोरि तेल तमीचर, खोरि धाइ आइ बाँधत लँगूर हैं। तैसा कपि कौतुकी डरात ढीलेगात कै कै, लातके अघात सहै जी में कहै कूर हैं। बाल किलकारी कै कै तारी दै दै गारी देत, पाछे लागे बाजत निशान ढोल तूर हैं। बालधी बढ़न लागि ठौर ठौर दीन्ही आ ग, बिन्ध की दवारि कैधौं कोटि शत सूरहैं ॥३॥ लाइलाइ आगि भागे बाल जात जहाँ तहाँ, लघु है निबुकि गिरि मेरु ते विशाल भो। कौतुकी कपीश कूदि कनक कँगूरा चढ़्यो, रावण भवन चढ़ि ठाढ़ो तेहि कालभो ॥ तुलसी बिराज्यो व्योम बालधी पसारी भारी, देखे हहरात भट कालसों कराल भो। तेज को निधान मानो कोटिक कृशानु भानु, नख बिकराल मुख तैसो रिसि लाल भो ॥ ४ ॥ बालधो बिशाल विकराल ज्वालजाल मानौं, लङ्क लीलिबेको काल रसना पसारी है।

कै धौं व्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु, बीर-रस बीर तरवारि सी उघारी है ॥ तुलसी सुरेशचाप कैधौं दामिनी कलाप, कैधौं चली मेरु ते कृशानु-सरि भारी है। देखैं यातुधानी अकुलानी कहैं, कानन उजार्‌यो अब नगर प्रजारी है ॥५॥ जहाँ तहाँ बुबुकि बिलोकि बुबुकारी देत, जरत निकेत धावो धावो लागि आगिरे। कहाँ तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी, ढोटो छोहरा अभागे भोंड़े भागिरे ॥ हाथी छोरो घोड़ा छोरो महिष बृषभ छोरो, छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागिरे। तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानकी कहैं, बार-बार कह्यो पिय कपि सों न लागिरे ॥६॥ देखि ज्वालजाल हाहाकार दशकन्ध सुनि, कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान हैं। लिये शूल शेल पाश परिघ प्रचण्ड दण्ड, भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं ॥ तुलसी समिध सौंज

लङ्क यज्ञकुण्ड लखि, यातुधान पुङ्गीफल यव तिल धान हैं। स्रुवा सों लँगूर बल मूल प्रतिकूल हवि, स्वाहा महा हाँकि हाँकि हुने हनुमान हैं ॥७॥ गाज्यो कपि गाज ज्यों विराज्यो ज्वाल-जालयुत, भाजे बीर धीर अकुलाय उठ्यो रावनो ॥ धाओ धाओ धरो सुनि धाये यातुधान धारि, बारि धारा उलचै जलद जौन सावनो ॥ लपट झपट झहराने हहराने बात, भहराने भट पर्‍यो प्रबल परावनो। ढकनि ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि, नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो ॥८॥ बड़ो विकराल बेष देखिसुनि सिंहनाद उठ्यो मेघनाद सविषाद कहै रावनो। बेग जितो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि, कालऊ करालता बड़ाई जीतो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं, जाको ऐसो दूत सो साहिब अबै आवनो। काहे की कुशल रोषे राम बाम देवहूकी, विषम बलीसों वादि बैरको बढ़ावनो ॥९॥

पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहैं, जाति हैं परानी गति जानी गज चालि हैं। बसन बिसारे मणि भूषण सँभारत न, आनन सुखाने कहैं क्योंहुँ कोऊ पालिहै ॥ तुलसी मदोवै मींजि हाथ धुनि माथ कहै, काहू कान कियो न मैं केतो कह्यों कालि है। बापुरे विभीषण पुकारि बारबार कह्यो, बानर बड़ी बलाय घने घर घालि है ॥१०॥ कानन उजार्‍यो तौ उजार्‍यो न बिगार्‍यो कछु, बानर बिचारो बाँधि आन्यो हठि हार सों। निपट निडर देखि काहू न लख्यो विशेषि, दीन्हों न छुड़ाय कहि कुल के कुठार सों ॥ छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरेसब, साँपिन सों खेलै मेलैं गरे छुराधार सों। तुलसी मदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु, बार बार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजार सों ॥ ११ ॥ रानी अकुलानी सब डाढ़त परानी जाहिं, सकै न बिलोकि बेष केशरीकुमार के। मींजि मींजि हाथ

धुनि माथ दशमाथ तिय, तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगार को ॥ सब असबाब डाढ़ो मैं न काढ़ो तै न काढ़ो, जिय की परी सँभार सहन भँडार को । खीझति मदोवै सविषाद देखि मेघनाद, बयो लुनियन सब याही दाढ़ीजार को ॥१२॥ रावण की रानी यातुधानी बिलखानी कहै हा हा कोऊ कहै बीसबाहु दशमाथ सों । काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदर तू, धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथ सों । काहे अतिकाय काहे काहेरे अकम्पन, अभागे तीय त्यागे भोंड़े भागे जात साथ सों ॥ तुलसी बढ़ाइ बाद शालते बिशाल बाहै, याही बल बालिसों बिरोध रघुनाथ सों ॥१३॥ हाट बाट कोट ओट अटनि अगार पौरि, खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्हीअति आगि है । आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू, ब्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि है ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरैं, बूँदियासी लंक

पघिलाइ पर पागि है । तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं, चित्रहू के कपिसों निशाचर न लागिहै ॥ १४ ॥ लागि लागि आगि भागि भागि चले जहाँ तहाँ, धीय को न माय बाप पूत न सँभारहीं । छूटे बार बसन उघारे धूम धुन्ध अन्ध, कहैं बारे बूढ़े बारि बारि बार बार हीं ॥ हय हिहिनात भागे जात घहरात गज, भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं । नाम लै चिलात बिललात अकुलात अति, तात तात तौंसियत झौंसियत झारहीं ॥१५॥ लपट कराल ज्वाल जाल माल दुहुँदिशि, धूम अकुलाने पहिचाने कौन काहिरे । पानी को ललात बिललात जरे गात जात, परे पाँइ माल जात भ्रात तू निबाहिरे ॥ प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप, बाप, तू पराहि पूत पूत तू परा हिरे । तुलसी बिलोकि लोक ब्याकुल बेहाल कहैं, लेहि दशशोश अब बीस चख चाहिरे ॥ १६॥

बीथिका बजार प्रति अटनि अगार प्रति, पँवरि पगारप्रति बानर बिलोकिये । अद्धं ऊद्धं बानर बिदिश दिशि बानर है, मानहु रह्यो है भरि बानर तिलोकिये ॥ मूँदे आँखि हिय में उघारे आँखि आगे ठाढ़ो, धाइ जाइ जहँ तहँ और कोऊ को किये । लेहु अब लेहु तब कोऊ न लिखाओ मानो सोइ सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिये ॥ १७ ॥ एक करै धौंज एक कहै काढ़ो सौंज एक औंजि पानि पीकै कहै बनत न आवनो । एक परे गाढ़े एक डाढ़तहि काढ़े एक, देखते हैं ठाढ़े कहैं पावन भयावनो ॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि, अजहूँ न छाँड़ै बाल गालली बजावनो । धावरे बुझावरे कि बावरे जियावरे हो, औरे आगी लागी न बुझावै सिन्धु सावनो ॥ १८ ॥ कोपि दशकन्ध तब प्रलय पयोद बोले, रावण रजाइ धाइ आये यूथ जोरि कै । कह्यों लङ्कपति लङ्क बरत बुताओ बेगि

बानर बहाइ मारौं महा बारि बोरिकै। भले नाथ नाइ माथ चले पाथ प्रदनाथ, बरषैं मुशलधार बार बार घोरिकै। जीवन ते जागी आगी चपरि चौगुनी लागी, तुलसी भभरि मेघ भागे मुख मोरिकै ॥ १९ ॥ इहाँ ज्वाल जरे जात उहाँ गलानि गरेगात, सूखे सकुचात सब कहत पुकार हैं। युग षट भानु देखे प्रलय कृशानु देखे, शेषमुख अनल बिलोके बार बार हैं ॥ तुलसी सुन्यो न कान सलिल सर्पी समान, अति अचरज किये केशरी कुमार हैं। बारिद वचन सुनि धुने शीश सचिवन्हि, कहै दसशीश ईश बामता विकार हैं ॥ २० ॥ पावक पवन पानी भानु हिमवान यम, काल लोकपाल मेरे डर डाँवा डोल हैं। साहिब महेश सदा शंकित रमेश मोहिं, महातप साहस बिरंचि लिये मोल हैं। तुलसी तिलोक आज दूजो न बिराजै राज, बाजे बाजे राजनि के बेटी बेटा ओल हैं। को हैं ईश नाम को जो बाम होत मोहूँ सो कों

मालवान रावरे के बावरे से बोल हैं ॥ २१ ॥ भूमि भूमिपाल ब्याल पालक पताल नाकपाल, लोकपाल जेते सुभट समाज है। कहै मालवान यातुधानपति रावरे को, मनहूँ अकाज आनै ऐसो कौन आज हैं ॥ राम कोह पावक समीर सीय श्वास कीश, ईश बामता बिलोकु बानर के ब्याज हैं ।जारत प्रचारि फेरि २ सो निशंक लङ्क, जहाँ बाँको बीर तोसे शूर शिरताज हैं ॥ २२ ॥ पान पकवान विधि नाना कै सँधानो सीधो, विविध बिधान धान बरत बखार हीं। कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीठ, काढ़त कहार सब जरे भरे भार हीं ॥ प्रबल पावक बाढ़े जहँ काढ़े तहँ डाढ़े, झपट लपट भरे भवन भँडार हीं। तुलसी अगार न पगार न बजार बच्यो हाथी हथसार जरे घोरे घोरसार हीं ॥२३॥ हाट बाट हाटक पिघिल चलो घी सो घनो, कनक कराही लङ्क तलफल ताय सों। नाना पकवान यातुधान बलवान सब, पागि पागि ढेरी

कीन्ही भलीभाँति भाय सो ॥ पाहुने कृशानु पावमान सो परोसो, हनुमान सनमानिकै जेवाँये चित चाय सों। तुलसी निहारि अरि नारि दै दै गारि कहैं, बावरे सुरारि बैर कीन्हो रामराय सों ॥ २४ ॥ रावण सो राज रोग बाढ़त विराट उर, दिन दिन विकल सकल सुख राँकसो। नाना उपचार करि हारे सुर सिद्धि मुनि, होत न विशोक ओत पावै न मनाकसो ॥ रामकी रजाइते रसाइनी समीर सूनु, उतरि पयोधि पार शोधि शर बाँकसो। यातुधान बुट पुटपाक लङ्क जातरूप, रतन यतन जारि कियो है मृगाँक सो ॥ २५ ॥ जारि बारिकै बिधूम बारिधि बुताइ लूम, नाइ माथो पगनि भो ठाढ़ो कर जोरि कै। मातु कृपा कीजै सहिदानि दीजै सुनि सीय, दीन्ही है अशीश चारु चूड़ामणि छोरि कै ॥ कहा कहौं तात देखे जात ज्यों बिहात दिन, बड़ी अवलम्बही सो चले तुम तोरि

कै। तुलसी सनीर नैन नेहसों सिथिल बैन, बिकल बिलोकि कपि कहत निहोरि कै ॥ २६ ॥ दिवस छ सात जात जानबे न मातु धरु, धीर अरि अंतकी अवधि रही थोरिकै। बारिधि बँधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ वचन विनीत कहि सीताको प्रबोध करि, तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरिकै ॥ जै जै जानकीश दशीशश करि केशरी कपीश कूद्यो बातजात बारिधि हलोरिकै ॥ २७ ॥ साहसी समीरसूनु नीरनिधि लाँघि लखि, लङ्क सिद्ध पीठि निशि जागो है मशान सो। तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई, देवी शीय सारिखी दियो है बरदान सो ॥ बाटिका उजारि अच्छधारि मारि जारि गढ़, भानुकुल भानुको प्रताप भानु भानसो। करत बिशोक लोक कोकनद कोक कपि, कहै जाम्ववन्त आयो आयो हनुमान सो ॥ २८ ॥ गगन निहारि

किलकारी भारी सुनि, हनुमान पहिचानि भये सानँद सचेत हैं। बूड़त जहाज बच्यो पथिक समाज मानो आजु जाये जानि सब अंकमाल देत हैं॥ जै जै जानकीश जै जै लषण कपीश कहि, कूदे कपि कौतुकी नटत रेत रेत हैं। अंगद मयंद नल नील बलशील महा, बालधी फिराबैं मुख नाना गति लेत हैं॥ २९॥ आये हनुमान प्राण हेतु अंकमाल देत, पगधरि एक चुम्बत लँगूल हैं। एक बूझै बार बार सीय समाचार कहौ, पवनकुमार भो बिगत श्रम शूल हैं॥ एक भूखे जानि आगे आनि कन्द मूल फल, एक पूजै बाहुबल मूल तोरि फूल हैं। एक कहै तुलसी सकल सिद्धि ताके जाके, कृपापाथनाथ सीतानाथ सानुकूल हैं॥ ३०॥ सीय को सनेह शील कथा तथा लङ्क की कहत चले चायसों सिराने पथ क्षण में। कह्यो युवराज बोलि बानर समाज आजु, खाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुवन में॥ मारे बागवान ते पुकारत देवानगे, उजारे

बाग अंगदादि खाये धाय तनमें । कहै कपिराज करि काज, आये कीश तुलसी की शपथ महा-मोद मेरे मनमें ॥ ३१ ॥ नगर कुबेरको सुमेरको बराबरी बिरंचिबुद्धि को बिलास लंक निर्माण भो । ईशहि चढ़ाये शीश बीसबाहु बीर तहाँ रावण सो राजा रजतेज को निधान भो ॥ तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौंज सम्पदा सकेलि चाकि राखी राशि जाँगर जहान भो । तीसरे उपास वनवास सिन्धुपास सो, समाज महाराज-जीको एक दिन दानभो ॥ ३२ ॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥ ५ ॥

———

* अथ लंकाकाण्ड प्रारम्भ *

* घनाक्षरी *

बड़े विकराल भालु वानर विशाल बड़े, तुलसी बड़े पहाड़ लै पयोधि तोपि हैं। प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बाहुदण्ड खण्डि, मण्डि मेदिनीको मण्डलीकलीक लोपि हैं॥ लंकदाहु देखे न उछाहु रह्यो काहुनको, कहैं सब सचिव पुकारि पाँवरोपि हैं। बाचिहै न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहू के, को है रण रारिको जो कोशलेश कोपि हैं॥ १॥ त्रिजटा कहति बारबार तुलसीश्वरी सों, राघौ बाण एकही समुद्र सातो सोषि हैं। सकुल सँहारि यातुधान धारि जम्बुकादि, योगिनी जमाति कालिका कलाप तोषि हैं॥ राजदै निवाजिबो बजाइकै बिभीषणै, बजैंगे ब्योम बाजने बिबुध प्रेम पोषि हैं। कौन दशकन्ध कौन मेघनाद बापुरो, को कुम्भकर्ण कीट जब राम रण

रोषि हैं ॥ २ ॥ विनय सनेह सों कहति सिय त्रिजटा सों, पाये कछु समाचार आरजसुवनके । पाये जू बँधायो सेतु, आये भानुकुलकेतु आये देखि देखि दूत दारुण दुवन के ॥ बदन मलीन बलहीन दीन देखि मानो मिटे घटे तमीचर तिमिर भुवनके । लोकपति शोक कोक मूँदे कपि कोक-नद, दण्ड द्वै रहे हैं रघुआदित उवनके ॥ ३ ॥

* झूलना *

सुभुज मारीच खर त्रिशिर दूषण बालि बधत ज्यहि दूसरो शर न सांध्यो । आनि पर बाम विधि-बाम त्यहि रामसों, सकत संग्राम दशकंध कांध्यो ॥ समुझितुलसीश कपि कर्म घरघर घैरु, बिकल-सुनिसकल पाथोधि बांध्यो । बसत गढ़बंक लंकेश नायक अछत, लंक नहिं खातकोउमातरांध्यो॥४॥

* सवैया *

बिश्वजयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी । बातुल मातुल की न सुनी

शिष का तुलसी कपि लंक न जारी ॥ ह्वै है भलो रघुनाथ मिले फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी । कीर्त्ति बड़ी करतूति बड़ी, जन बात बड़ी सो बड़ोई बजारी ॥ ५ ॥ जब पाहन भे बनबाहनसे, उतरे बनरा जय राम रढ़े । तुलसी लिये शैलशिला सब सोहत, सागर ज्यों बल-बारि बढ़े ॥ करि कोप करै रघुबीर को आयसु, कौतुकही गढ़ कूदि चढ़े । चतुरंग चमू पल में दलिकै रण रावण राढ़िको हाड़ गढ़े ॥ ६ ॥

* घनाक्षरी *

बिपुल बिशाल बिकराल कपि भालु मानो, काल बहु बेष धरे धाये किये करषा । लिये शिला शैल साल ताल औ तमाल तोरि, तोपै तोयनिधि सुरको समाज हरषा ॥ डगे दिग्कुं-जर कमठ कोल कलमले, डोले धराधर धारि धरा धर धरषा । तुलसी तमकि चलैं राघवशपथ करैं, को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ७ ॥

आये शुक सारन बोलाये ते कहनलागे, पुलकि शरीर सैना कहत फहम ही। महाबली बानर बिशाल भालु कालसे, कराल हैं रहै कहाँ समाहिंगे कहाँ मही॥ हँस्यो दशकन्ध रघुनाथ को प्रताप सुनि, तुलसी दुरावै मुख सूखत सहम हो। रामके बिरोध बुरो विधि हरि हरहू को, सबको भलो है राजा राम के रहम ही॥ ८॥

आयो आयो आयो सोई बानर बहोरि भयो, शोर चहुँ ओर लङ्का आये युवराजके। एक काढ़े सौंज एक धौंज करे कहा ह्वै है, पोचभई महाशोच सुभट समाजके॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि, मूँदे कान यातुधान मानो गाजे गाजके। सहमि सुखात बातजात की सुरति करि, लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाजके॥९॥

तुलसी सबल रघुबीरजी को बालिसुत, वाहि न गनत बात कहत करेरी सी। बखशीश ईशजी-की खीश होत देखियत, रिस काहे लागत कहत

हौं मैं तेरी सी ॥ चढ़ि गढ़ मढ़ दृढ़ कोटके कंगूरे कोपि, नेक धका देहै ढैहै ढेलनकी ढेरीसी। सुनु दशमाथ नाथ साथके हमारे कपि, हाथ लङ्का लाइहै तो रहैगी हथेरी सी॥ १०॥ दूषण बिराध खर त्रिशिरा कबन्ध बधे, तालऊ बिशाल बेधे कौतुक है कालि को। एकही बिशिख बश भये बीर बाँकुरे सो, तोहू है बिदित बल महाबली बालि को॥ तुलसी कहत हित मानत न नेकु संक, मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को। बीर करि केशरी कुठार पानि मानिहारि, तेरी कहा चली बूड़े तोसे गनै घालिको॥ ११॥

* सवैया *

तोसों कहौं दशकन्धर रे रघुनाथ विरोध न कीजिय बौरे। बालि बली खरदूषण और अनेक गिरे जैते भीति में दौरे॥ ऐसिय हाल भई तोहिको नतौ लै मिलु सीय चहै सुख जौरे। रामके रोष न राखि सकैं तुलसी बिधि

श्रीपति शंकर सौरे ॥ १२ ॥ तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथ के सेवक को जन होहौं । है बलवान गली निज श्वान न लाज तु गाल बजावत सोहौं ॥ बीसभुजा दशशीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भङ्गते जोहौं । खेत में केहरिज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तोहौं ॥ १३ ॥ कोशलराज के काजहौं आजु त्रिकूट उपारि लै बारिधि बोरौं । द्वै भुजदण्ड से अंडकटाह चपेट के चोट चटाक दै फोरौं ॥ आयसु भङ्ग ते जौं न डरौं सब भींजि सभासद शोणि घोरौं । बालि को बालक जौं तुलसी दशहू मुखके रणमें रद तोरौं ॥ १४ ॥ अति कोपसों रोप्यो है पाँव सभा सब लङ्क सशङ्कित शोर मचा । तमके घननादसे बीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैन पचा ॥ न टरै पग मेरुहिते गरुभो सो मनोमहि संग बिरंचि-रचा । तुलसी सब शूर सराहत हैं जगमें बलशालि है बालि बचा ॥ १५ ॥

* घनाक्षरी *

रोप्यो पाँव पैजके विचारि रघुबीर बल, लागे भट सिमिट न नेकु टसकतु है। तज्यो धीरधरणि धरणिधर धसकत, धराधर धीरभार सहि न सकतु है ॥ महाबली बालिको दबत दलकत भूमि, तुलसी उछलि सिन्धु मेरु मसकतु है। कमठ कठिन पीठ पट्ठा परो मन्दर को, सोई आयो काम पै करेजो कसकतु है ॥ १६ ॥

* झूलना *

कनकगिरिशृङ्ग चढ़ि देखि मर्कट कटक, बदति मन्दोदरी परम भीता। सहसभुज मत्त-गजराज नरकेशरी, परशुधर गर्व जेहि देखि बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कोशलधनी, ख्यालहीं बालि बलशालि जीता। रेकन्त तृण-दन्त गहि शरण श्रीराम कहि, अजहुँ यहिभाँति लै सौंपु सीता॥ १७॥ रे नीच मारीच बिचलाइ हति ताड़का, भंजि शिवचाप सुख सबहिं दीन्ह्यो।

सहसदशचारि खल सहित खरदूषणहि, पठै यमधाम तैं तउ न चीन्ह्यो ॥ मैं जो कहौं कन्त सुनुमन्त भगवन्त सों, बिमुख ह्वै बालिफल कौन लीन्ह्यो। बीस भुज शीशदश खीश गये तबहिं, जब ईश के ईशसों बैर कीन्ह्यो ॥ १८ ॥ बालि दलि काल्हि जलयान पाषान किये, कन्त भगवन्त तैं तउ न चीन्हे। बिपुल बिकराल भट भालु कपि काल से, संग तरु तुंग गिरि शृंग लीन्हे ॥ आइगे कोशलाधीश तुलसीश जेहि, छत्रमिस मौलि दश दूरि कीन्हे। ईश बकशीश जनि खीश करु ईश सुनु, अजहुँ कुल कुशल बैदेहि दीन्हे ॥१९॥ सैन सम्मूह कपि कौन गनै अर्बुदै, महाबलि बीर हनुमान जानी। भूलिहैं दश दिशा शीश पुनि डोलिहैं, कोपि रघुनाथ जब बान तानी ॥ बालिहू गर्ब जिय माहिं ऐसो कियो, मारि दहपट कियो यमकी घानी। कहत मन्दोदरी सुनहिं रावण मतो, बेगि लै देहि बैदेहि रानी ॥ २० ॥

गहन उजारि पुरजारि सुत मारि तब, कुशलगो कीश बरवैरि जाको । दूसरो दूत प्रणरोपि कोप्यो सभा, खर्ब कियो सर्ब को गर्व थाको ॥ दास तुलसी सभय वदति मयनन्दिनी, मन्दमति कन्त सुनु मन्तम्हाँको । तौलौं मिलु वेगि नहिं जौलौं रण रोष भयो, दाशरथि बीर बिरुदैत बाँको ॥२१॥

* घनाचरी *

कानन उजारि अक्षमारि धारि धूरि कीन्ही, नगर प्रचार्‍यो सो बिलोक्यो बल कीश को । तुम्हैं विद्यमान यातुधान मण्डली में कपि, कोपि रोप्यो पाँवसो प्रभाव तुलसीश को ॥ कन्त सुनु मन्त कुल अन्त किये अन्त हानि, होतो कीजै हीयते भरोसो भुजबीश को । तौलौं मिलु बेगि जौलौं चाप न चढ़ायो राम, रोषि बाण काढ़्यो ना दलैया दशशीश को ॥ २२ ॥ पवन को पूत देखौ दूत बीर बाँकुरो जो, बंक गढ़ लङ्क सों डकाढकेलि ढाहिगो । बालि बल-

शालिको सो कालि्ह दापदलि कोपि, रोप्यो पाँउ चपरि चमूको चाउ चाहिगो ॥ सोई रघुनाथ कपि साथ पाथनाथ बाँधि, आयो नाथ भागे ते खिरिर खेह खाहिगो । तुलसी गरब तजि मिलिबेको साज साजि देहि सिय नतो पिय पायमाल जाहिगो ॥ २३ ॥ उदधि अपार उतरत नहिं लागीबार, केशरीकुमार सो अदंड कैसो डाँड़िगो । बाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि मारि भट, भारी भारी रावरे को चाँउर सो काँड़िगो ॥ तुलसी तिहारे विद्य-मान युवराज आजु , कोपि पाँव रोप्यो सब छूँछे कैकै छाँड़िगो । कहे की न लाज पिय अजहूँ न आये बाज सहित समाज गढ़ राँड़ कैसो भाँड़िगो ॥ २४ ॥ जाके रोष दुसह त्रिदोष दाह-दूरि कीन्हें, पैयत न क्षत्री खोज खोजत खल-कमें । महिषमती का नाहु साहसी सहसबाहु, समर समर्थ नाथ हेरिये हलकमें ॥ सहित समाज

महाराज सो जहाजराज, बूड़िगयो जाके बल बारिधि छलकमें । टूटत पिनाक के मनाक बाम रामसेते, नाक बिनु भये भृगुनायक पल-कमें ॥ २५ ॥ कीन्हीं क्षोणी क्षत्री बिनु क्षोणिप छपनहार, कठिन कुठार पाणि बीर बानि जानि कै । परम कृपाल जो नृपाल लोकपालन पै, जब धनुहाई ह्वै है मन अनुमानि कै ॥ नाक में पिनाक मिसि बामता बिलोकि राम, रोक्यो परलोक लोक भारो भ्रम मानि कै । नाइ दशमाथमहि जोरि बीश हाथ पिय, मिलिये पै नाथ रघुनाथ पहिचानि कै ॥ २६ ॥ कह्यो मत मातुल विभी-षणहु बार बार, अंचल पसारि पिय पाँय लैलै हौं परी । विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथगति, समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौं परी । वायस विराध खरदूषण कबंध बालि, बैर रघुबीर के न पूरी काहू की परी । कंत बीश लोचन बिलो-किये कुमन्त फल, ख्याल लङ्कलाई कपि राँड़कीसो झोपरी ॥ २७ ॥

* सवैया *

रामसों साम किये नित है हित कोमलकाज न कीजिये टाँठे। आपनि सूझि कहौं पिय बूझिये जूझिबे योग न ठाहरु नाठे॥ नाथ सुनि भृगुनाथ कथा बलि बालि गयो चलि बात के साँठे। भाइ विभीषण जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनि सायर काँठे॥ २८॥ पालिबे को कपि भालु चमू यम काल करालहु कोपहरी है। लङ्कसे बङ्क महागढ़ दुर्गम ढाहिबे दाहिबे को कहरी है॥ तीतर तोम तमीचरसेन समीर को सूनु बड़ा बहरी है। नाथ भलो रघुनाथ मिले रजनीचरसेन हिये हहरी है॥ २९॥

* घनाक्षरी *

रोषे रण रावण बोलाये बीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाज की। चली चतुरंग चमू चपरि हने निशान, सेना सराहन

याग रातिचरराजकी ॥ तुलसी बिलोकि कपि भालु किलकत, ललकत लखि ज्यों कंगालपातरी सुनाजकी। रामरुख निरखि हरषि हिय हनुमान, मानो खेलकर खोली शीश ताजबाजकी ॥३०॥
साजिकै सनाह गजगाह सेउसाह दल, महाबली धाये बीर यातुधान धीरके। इहाँ भालु बन्दर बिशाल मेरु मन्दर से, लिये शैल शाल तोरि नीरनिधि तीर के ॥ तुलसी तमकि तकि भिरे भारी युद्ध क्रुद्ध, सेनप सराहे निज निज भट-भीरके। रुण्डनके झुण्ड भूमि भूमि झुकरे से नाँचैं, समर सुमार शूर मारे रघुबीरके ॥ ३१ ॥

* सवैया *

तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजि चढ़े छटि छैल छबीले। भारी गुमान जिन्हैं मनमें कबहूँन भये रण में तनु ढीले ॥ तुलसी लखि केहरि केहरी के झपटे पटके सब शूर सलीले। भूमिपरे भट घूमि कराहत हाँकि हने हनुमान हठीले

॥ ३२ ॥ शूर सजोइल साजि सुबाजि सुसेल धरे बगमेल चले हैं। भारी भुजा भरि भारी शरीर बली बिजयी सब भाँति भले हैं॥ तुलसी जिन्हें धायधुकै धरणी धरणीधर धीर धकान हले हैं। ते रण तिच्छन लक्खन लाखन दानि ज्यों दारिद दाबि दले हैं॥ ३३ ॥ गहि मंदर बंदर भालु चले सो मनो उनये घन सावनके। तुलसी उत झुराड प्रचराड झुके झपटै भट जे सुर दावन के॥ बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे न टरे हठि बैर बढ़ावन के। रण मारु मची उपरी उपरा भले बीर रघूपति रावन के॥ ३४ ॥ शर तोमर शेल समूह पँवारत मारत बीर निशाचर के। इतते तरुताल तमाल चले खर खंड प्रचंड महीधर के॥ तुलसी करि केहरि नाद भिरे भट खड्ग खगे खपुआ खर के। नख दन्तन सों भुजदंड बिहंडत मुंड सों मुंड परे झर के॥ ३५ ॥ रजनीचर मत्त गयन्द घटा बिघटै मृगराज के साज लरै।

झपटै भट कोटि मही पटकै गरजै रघुबीर की सौंह करै। तुलसी उत हाँक दशानन देत अचेत भे बीर को धीर धरै। बिरुझो रनमारुत को बिरुदैत जो कालहु काल को बूझिपरै ॥ ३६ ॥ जे रजनीचर बीर बिशाल कराल बिलोकत काल न खाये। ते रणरोर कपीश किशोर बड़े बरजोर परे फल पाये ॥ लूम लपेटि अकाश निहारि कै हाँकि हठी हनुमान चलाये। सूखिगे गात चले नभ जात परे भ्रमबात न भूतल आये ॥ ३७ ॥ जो दशशीश महीधर ईश को बीस भुजा खुलि खेलनिहारो। लोकप दिग्गज दानव देव सबै सहमे सुनि साहस भारो ॥ बीर बड़ो बिरुदैत बली अजहूँ जग गावत जासु पँवारो। सो हनुमान हन्यो मुठिका गिरिगो गिरिराज ज्यों गाज को मारो ॥ ३८ ॥ दुर्गम दुर्ग पहारते भारे प्रचंड महा भुजदंड बने हैं। लख्य में पख्यर तिख्यन तेजसे शूर समाज में गाज गने हैं ॥ ते बिरुदैत

बली रण बाँकुरे हाँकि हठी हनुमान हने हैं। नामलै राम देखावत बंधुको घूमत घायल घायघने हैं॥ ३९॥

* घनाक्षरी *

हाथिन सों हाथी मारे घोरे घोरे सों संहारे, रथनि सों रथ बिदरनि बलवान कीं। चंचल चपेट चोट चरण चकोट चाहैं, हहरानी फौजैं भहरानी यातुधान की॥ बार बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहैं रीति साहेब सुजान की। लाँबी लूम लसत लपेटि पटकत भट, देखौ देखौ लषन लरनि हनुमानकी॥ ४०॥ दबकि दबोरे एक बारिधि में बोरे एक, मगन मही में एक गगन उड़ात हैं। पकरि पछारे कर चरण उखारे एक, चीरि फारि डारे एक मींजि मारे लात हैं॥ तुलसी लषण राम रावण बिबुध बिधि, चक्रपाणि चण्डिपति चण्डिका सिहात हैं।

बड़े बड़े बानइत बीर बलवान बड़े, यातुधान जूथ पतिपाते बात जात हैं ॥ ४१ ॥ प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बाहुदण्ड बीर, धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै। महाबल पुन्ज कुंज रारि ज्यों गरजि भट, जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरिकै॥ मारे लात तोरे गात भागे जात हाहा खात कहै तुलसीश राखि रामकी सों टेरिकै॥ ठहर ठहर परे कहर कहर उठैं, हहर हहर हर सिद्ध हँसे हेरिकै ॥ ४२ ॥ जाकी बाँकी बीरता सुनत सहमत शूर, जाकी आँच अजहुँ लसत लंक लाहसी । सोई हनुमान बलवान बाँको बानइत, जोहै यातुधान सेना चलै लेत थाहसी ॥ कंपत अकंपन सुखाय अतिकाय काय, कुंभूऊकरण आइ रह्यो पाइ आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो, बीर रघुबीर को समीर सूनु साहसी ॥ ४३ ॥

* झूलना *

मत्तभट-मुकुट-दशकन्ध-साहस-शैल भृंग विद्दरनि जनु बज्र टाँकी। दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ, शेष संकुचित शङ्कित पिनाकी॥ चलत महि मेरु उच्छलत सायर सकल, बिकल विधि बधिर दिशि बिदिशि झाँकी। रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक स्रवत, सुनत हनुमान की हाँकबाँकी ॥ ४४ ॥ कौनकी हाँकपर चौंकि चंडीश विधि, चराडकर थकित फिरि तुरङ्ग हाँके। कौन के तेज बलसीम भट भीमसे, भीमता निरखि करि नयन ढाँके॥ दास तुलसीश के बिरद बरणत बिदुष, वीर बिरुदैत बर बैरि धाँके। नाक नरलोक पाताल कोऊ कहत किन, कहाँ हनुमान से बीर बाँके ॥ ४५ ॥ यातुधानावली मत्त-कुँजर-घटा निरखि मृगराज जनु गिरिते टूट्यो। बिकट चटकन चोट चरण गहि पटकि महि, निघटि गये सुभट सत सबको छूट्यो ॥ दास तुलसी परत

धरणि धरकत झुकत हाटसी उठत जम्बुकनि लूट्यो । धीर रघुबीर के बीर रण बाँकुरे हाँकि हनुमान कुलि कटक कूट्यो ॥ ४६ ॥

* छप्पय *

कतहुँ बिटप भूधर उपारि अरिसैन बरष्षत । कतहुँ बाजि सों बाजि मर्दि गजराज करष्षत ॥ चरण चोटचटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत । बिकट कटक बिद्दरत बीर बारिद जिमि गज्जत ॥ लंगूर लपेटत पटकिमहि जयति राम जय उच्च- रत । तुलसीश पवन नन्दन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ॥ ४७ ॥

* घनाक्षरी *

अंग अंग दलित ललित फूले किंशुक से, हने भट लाखन लषन यातुधान के । मारिकै पछारिकै उपारि भुजदण्ड चण्ड, खण्ड खण्ड डारे ते विदारे हनुमान के ॥ कूदत कबन्ध के कदम्ब बम्ब सी करत धावत देखावत हैं लाघौ

राघौ बान के । तुलसी महेश विधि लोकपाल देवगण, देखत बिमान चढ़े कौतुक मशान के ॥ ४८ ॥ लोथिन सों लोहू के प्रवाह चले जहाँ तहाँ, मानहुँ गिरिन्ह गेरु झरना झरत हैं । शोणित सहित घोर कुंजर करारे भारे कू लते समूल बाजि बिटप परत हैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारी भारी तहाँ शूरन उछाह क्रूर कादर डरत हैं । फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात, काक कंक बालक कोलाहल करत हैं ॥ ४९ ॥ ओझरीय झोरी काँधे आँतनि की सेल्ही बाँधे, मुण्ड के कमण्डल खपर किये कोरिकै । योगिनी जमाति जोरि झुण्ड बनीतापसी सी, नीर तीर बैठी सो समर सरि खोरिकै ॥ शोणित सों सानि सानि गूदा खात सतुआ से, एक प्रेत पियत बहोरि घोरि घोरिकै । तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ, हेरिहेरि हँसत हैं हाथ जोरि जोरिकै ॥ ५० ॥

* सवैया *

राम शरासन ते चले तीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी । रावण धीर न पीर गनी लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥ शोणित छीट छटानि छुटो तुलसी प्रभु सोहै महाछवि छूटी । मानो मरकत शैल बिशाल में फैलि चली बरबीर बहूटी ॥ ५१ ॥

* घनाक्षरी *

मानी मेघनादसों प्रचारि भिरे भारी भट, आपने आपने पुरुषारथ न ढीलकी । घायल लषणलाल सुनि बिलखाने राम, भई आश शिथिल जगन्निवास डील की ॥ भाई को न मोह छोह सीय को न तुलसीश, कहैं मैं बिभीषण की कछु न सबील की । लाज बाँह बोल को निवाजे की सँभार सार साहेब न राम से बलाइ लेउँ शीलकी ॥ ५२ ॥

* सवैया *

कानन बास दशानन सों रिपु आनन श्री शशि जीति लियो है । बालि महाबल शालि दल्यो कपि पालि बिभीषण भूप कियो है ॥ तीय हरी रणबन्धु पऱ्यो पै भऱ्यो शरणागत शोच-हियो है । बाँह पगार कृपालु उदार कहाँ रघुबर सों बीर बियो है ॥ ५३ ॥ लीन्ह उखारि पहार बिशाल चल्यो तेहि काल बिलम्ब न लायो । मारुतनन्दन मारुतको मनको खगराज को बेग लजायो ॥ तीखी तुरा तुलसी कहतो पै हिये उपमा को समाउ न आयो । मानो प्रतक्षण पर्वत की नभ लीक लसी कपि यों धुकि धायो ॥ ५४ ॥

* घनाक्षरी *

चल्यो हनुमान सुनि यातुधान कालनेमि, पठयो सो मुनि भयो पायो फल छलिकै । सहसा उखारो पहार बहु योजन को, रखवारे

मारे भारे भूरि भट दलिकैं ॥ बेग बल साहस सराहत कृपालु राम, भरतकी कुशल अचल लायो चलिकैं । हाथ हरिनाथ के बिकाने रघुनाथ जनु, शीलसिंधु तुलसीश भलो मान्यो भलिकैं ॥ ५५ ॥ बाप दियो कानन भो आनन शुभानन सों, बैरी भो दशानन सो तीय को हरणभो । बालि बलशालि दलि पालि कपिराजकै, बिभीषण निवाजि सेतुसागर तरण भो ॥ घोर रारि हेरि त्रिपुरारि विधि हारेहिय, घायल लषण बीर बानर बरण भो । ऐसे शोक में त्रिलोककै विशोक पलही में, सबही के तुलसी के साहेब शरण भो ॥ ५६ ॥

* सवैया *

कुम्भकरन्न हन्यो रण राम दल्यो दशकंधर कंधर तोरे । पूषण वंश बिभूषण पूषण तेज प्रताप गरे अरिओरे ॥ देव निशान बजावत गावत धावत गोमन भावत भोरे । नाचत बानर भालु सबै तुलसी कहि हारे हहा भय होरे ॥ ५७ ॥

* घनाक्षरी *

मारे रण रातिचर रावण सकुलदल अनुकूल देव मुनि फूल बरसतु हैं। नाग नर किन्नर बिरंचि हरि हर हेरि पुलक शरीर हिये हेतु हरषतु हैं॥ बाम ओर जानकी कृपानिधान के बिराजैं देखत बिषाद मिटे मोद सरसतु हैं। आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सब तुलसी निहालकै दिये सरखतु हैं॥ ५८॥

इति लङ्काकाण्ड सम्पूर्ण॥ ६॥

——*——

* अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः *

* सवैया *

बालि से बीर बिदारि सुकण्ठ थप्यो हरषे सुर बाजने बाजे । दाशरथी दशकन्ध दल्यो पल लंक बिभीषण राज बिराजे ॥ राम सुभाव सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गलगाजे । कायर कूर कपूतन की हद तेऊ गरीबनिवाज निवाजे॥ १॥ बेद पढ़ै बिधि शम्भु सभीत पुजावन रावन सों नित आवैं । दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहिते शिर नावैं ॥ ऐसेहु भाग भगे ॥ दशभालते जो प्रभुता कविकोविद गावैं । रामसे बाम भये त्यहि बामहि बाम सबै सुखसम्पति लावैं ॥ २ ॥ बेदबिरुद्ध मही मुनि साधु सशोक किये सुरलोक उजार्‌यो । और कहा कहौं तीय हरी तबहूँ करुणाकर कोप निवारयो ॥ सेवक छोहते छाँड़ि क्षमा तुलसी लख्यो राम

सुभाव तिहारयो। तौलौं न दाप दल्यो दशकन्धर जोलौं विभीषण लात न मारयो ॥ ३ ॥ शोक समुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जग जानत जैसो। नीच निशाचर बैरी का बंधु विभीषण कीन्ह पुरन्दर तैसो ॥ नाम लिये अपनाइ लियो तुलसो सो कहौ जग कान अनैसो। आरत आरति भंजन राम गरीब निवाज न दूसर ऐसो ॥ ४ ॥ मीत पुनीत किये कपि भालुको पाल्यो ज्यों काहु न बाल तनूजो। सज्जनसींव विभीषण भी अजहूँ बिलसै बरबन्धुबधूजो ॥ कौशलपाल बिना तुलसी शरणागतपाल कृपाल न दूजो। क्रूर कुजाति कपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ ५ ॥ तीयशिरोमणि सीय तजी ज्यहि पावक की कलुषाई दही है। धर्मधुरन्धर बन्धु तज्यो पुरलोगन की बिधि बोलि कहो है ॥ कीश निशाचर की करणी न सुनी न बिलोकि न चित्त रही है। राम सदा शरणागत की

अनखोही अनैसी सुभाय सही है ॥ ६ ॥ अपराध
अगाध भये जनते अपने उर आनत नाहिनजू ।
गणिका गज गीध अजामिल के गनि पातक-
पुञ्ज सेराहिंनजू ॥ लिये बारक नाम सो धाम
दियो ज्यहिधाम महामुनि जाहिं न जू । तुलसी
भजु दीनदयालहिं रे रघुनाथ अनाथहिं दाहिन
जू ॥ ७ ॥ प्रभु सत्य करी प्रह्लाद गिरा प्रगटे
नरकेहरि खम्भमहाँ । झषराज ग्रस्यो गजराज
कृपा ततकाल बिलम्ब किये न तहाँ ॥ सुर साखी
दै राखी है पांडुबधू पट लूटत कोटिन भूप जहाँ ।
तुलसी भजु शोचबिमोचनको जनको प्रण राम
न राख्यो कहाँ ॥ ८ ॥ नरनारि उघारि सभा
महँ होत दिये पट शोच हर्यो मनको ।
प्रह्लाद विषाद निवारण वारण तारण मीत
अकारनको ॥ जो कहावत दीनदयाल सही
ज्यहि भार सदा अपने पनको । तुलसी तजि
आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको

॥ ९ ॥ ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही । निजलोक दियो शवरी खगको कपि थापि सो मालुम है सबही॥ दशशीश बिरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही । करुणानिधि को भजुरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही ॥ १० ॥ कौशिक बिप्रबधू मिथिलाधिप के सब शोच दले पलमा हैं । बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रु सुसाहिब शील सराहैं ॥ ऐसी अनूप कहै तुलसी रघुनायक की अगुणी गुणगाहैं । आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथन छाहैं ॥ ११ ॥ तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेंचन हारे । ब्योम रसातल भूमि भरे नृप कूर कुसाहिब से तिहुँ खारे ॥ तुलसी तेहि सेवत कौन मरै रजते लघु को करै मेरुते भारे । स्वामी सुशील समर्थ सुजान सो तोसों तुही दशरत्थ दुलारे ॥ १२ ॥

* घनाक्षरी *

यातुधान भालु कपि केवट बिहंग जो जो पाऊो नाथ सद्य सो सो भयो काम काज को। आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमानि सो स्वभाव महाराज को॥ नाम तुलसी पै भोड़े भाग्य ते कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को। साहब समर्थ दशरत्थ के दयाल देव दूसरो न तोंसो तुही अपने की लाज को॥ १३॥ महाबली बालि दलि कायर सुकंठ कपिराज किये महाराज हौं न काहु काम को। भ्रातघात पातकी निशाचर शरण आये किये अंगोकार नाथ ऐते बड़े बामको॥ राय दशरत्थ के समर्थ तेरे नाम लिये तुलसी से कूर को कहत जग रामको। अपने निवाजे की तो लाज महाराज को है सुभाव समुझत मन मुदित गुलाम को॥१४॥ रूप शीलसिंधु गुणसिधु बंधुदीन को दया-

निधान जान मणि बीर बाहु बोल को । श्राद्ध किये गीध को सराहे फल शबरी के शिला शाप शमन निबाह्यो नेह कोलको ॥ तुलसीउराउ होत रामको स्वभाव सुनि को न बलिजाय न बिकाइ बिन मोल को । ऐसेहु सु साहब सों जाको अनुराग न सो बड़ोई अभागो भाग भागो लोभ लोलको ॥ १५ ॥ शूरशिरताज महाराजन के महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो । साहिब कहाँ जहान जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपाल के मराल होत खूसरो ॥ केवट पषान यातुधान कपि भालु तारे अपनायो तुलसी सो धींग धम धूसरो । बोल को अटल बाँह को पगार दीनबन्धु दूबरे को दानि को दयानिधान दूसरो ॥ १६ ॥ कीबेको बिशोक लोक लोकपालहूते सब कहूँ कोउ भो न चरवाहो कपि भालु को । पविको पहार कियो ख्यालही कृपाल राम बापुरो

विभीषण घरौंधा हो तो बाल को ॥ नाम ओट लेतही निखोट होत खोटे खल चोट बिन मोट पाइ भयो न निहाल को । तुलसी की बार बड़ि ढील होत शीलसिन्धु बिगरी सुधारिबेको दूसरो दयाल को ॥ १७ ॥ नाम लिये पूत को पुनीत किये पातकीश आरति नेवारी प्रभु पाहि कहे पीलकी । छलिनकी छौंड़ी सो निगोड़ी छोटि जाति पाँति कीन्ही लीन आपमें भामिनी भोंड़ी भीलकी ॥ तुलसी ओतारिबो बिसारिबो न अन्त मोहूँ नीकेहै प्रतीति रावरे स्वभाव शीलकी । देव तौ दयानिकेत देत दानि दीनन को मेरी बार मेरीही अभाग नाथ ढीलकी ॥ १८ ॥ आगे परे पहिन कृपा किरात कोलनि कपीश निशिचर अपनाय नाये माथ जू । साँचो सेवकाई हनुमानकी सुजानराय ऋणिया कहायो है बिकाने ताके हाथ जू ॥ तुलसी से खोटे खरे होत ओट नामही की माटी महँगाती मृग-

मदहूके साथ जू । बात चले बातको न मानिबो बिलग बलि काकी सेवा रीझि कै निवाजे रघुनाथ जू ॥ १९ ॥ कौशिक की चलत पषान की परस पाँइ टूटत धनुष बनिगई है जनक की । कोल भील शवरी बिहङ्ग भालु रातिचर रतिन के लालचिन प्रापति मनक की ॥ कोटिकला कुशल कृपाल नतपाल बलि बातहूँ कितेक तृण तुलसी तनककी । राय दशरत्थ के समर्थ राम राजमणि तेरे हेरे लोपै लिपि बिधिहू गनककी ॥ २० ॥ शिलाशाप पाप गुह गीधको मिलाप शबरीके बाप आप चलि गये हौ सो सुनी मैं । सेवक सराहे कपिनायक बिभीषण भरत सभा सादर सनेह सुरधुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथपाल साहब समर्थ एक नीकेमन गुनी मैं । दोष दुख दारिद दलैया दीनबन्धु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान सुनी मैं ॥ २१ ॥ मीत बालि बन्धु पूत दूत

दशकन्धबन्धु सचिव सराध कियो शबरी जटाइको। लङ्कजरी जो है जिय शोचसो विभीषण को कहौं ऐसे साहबकी सेवा न खटाइको ॥ बड़े एकएकते अनेक लोक लोकपाल अपने अपने की तौ कहैगो घटाइको। साँकरेको सेइबो सराहिबे सुमिरिबेको राम सों न साहब न कुमति कटाइको ॥ २२ ॥ भूमिपाल ब्यालपाल लोकपाल नाकपाल कारण कृपाल मैं सबैके जी की थाहली। कादरको आदर काहूके नाहां देखियत सबन सोहात है सेवा सुजान टाहली ॥ तुलसी सुभाय कहै नहीं कछु पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खास माहली। रामही के द्वारे पै बुलाइ सनमानियत मोसे दीन दूबरे कपूत कूर काहली ॥ २३ ॥ सेवा अनुरूप फल देत भूप कूप ज्यों बिहीन गुण पथिक पियासे जात पथके। लेखे जोखे चोखे चित्त तुलसी स्वारथहित नीके देखे देवता

देवैया गुण गथके ॥ गीध मानो गुरु कपि भालु मानो मीतके पुनीत गीत साके सब साहब समर्थ के । और भूप परखि सुलखि तौलि ताई लैत लसमके खसम तुहीं पै दशरथके ॥ २४ ॥ रीति महाराज की निवाजिये जो माँगनो सो दोष दुख दारिद दरिद्र कैकै छोड़िये । नाम जाको कामतरु देत फलचारि ताहि तुलसी बिहाइ कै बबूर रेंड़ गोड़िये ॥ याचै को नरेश देश देशको कलेश करै देहै तो प्रसन्न है बड़ी बड़ाई बोड़िये । कृपापाथ नाथ लाकनाथ नाथ सीता नाथ तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओड़िये॥२५॥

* सवैया *

जाके बिलोकेते लाकप होत बिशोक लहै सुर लोक सुठौरहि । सो कमला तजि चंचलता अरु कोटिकला रिझवै शिरमौरहि । ताको कहाइ कहै तुलसी तू लजाहि न माँगत कूकुर कौरहि। जानकी जीवन का जन ह्वै जरिजाउ सो जीह जो याँचत

औरहि ॥ २६ ॥ जड़ पंच मिले जेहि देहकरी करनी देखु धौं धरनीधरकी । जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार जो सार करै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु राम समान को आन है सेवक जासु रमा घरकी । जग में गति जाहि जगत्पति की परवाहि है ताहि कहा नरकी॥२७॥ जग याँचिय कोऊ न याँचिय तो जिय याँचिय जानकिजानहि रे । जेहि याँचत याँचकता जरि जाइ जो जारत जोर जहानहि रे ॥ गति देखु बिचार बिभीषण की अरु आनि हिये हनुमानहि रे। तुलसी भजु दारिद दोष दवानल संकट कोटि कृपानहि रे ॥ २८॥ सुनु कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहि के गुणगाथहि रे । सुख मंदिर सुन्दर रूप सदा उर आनि धरे धनु भाथहि रे॥ रसना निशि बासर सादर सों तुलसी जपु जानकी नाथहि रे । करु संग सुशील सुसंतन सों तजि कूर कुपंथ कुसाथहि रे ॥ २१ ॥ सुत

दार अगार सखा परिवार बिलोकु महा कुसमा-
जहि रे। सबको ममता तजिकै समता सजि सन्त
सभा न बिराजहि रे। नरदेह कहा करि देखु
बिचार बिगार गँवार न काजहि रे। जनि
डोलहि लोलुप कूकुर ज्यों तुलसी भजु कोशल-
राजहि रे ॥ ३० ॥ विषया परनारि निशा तरु
णाइ सो पाइ पर्‍यो अनुरागहि रे। यमके पहरू
दुख रोग बियोग बिलोकतहूँ न बिरागहि रे ॥
ममता बशते सब भूलि गयो भयो भोर महा भय
भागहि रे। जरठाई दिशा रविकाल उया अजहूँ
जड़ जीव न जागहि रे ॥ ३१ ॥ जनम्यो जेहि
योनि अनेक क्रियासुख लागि करी न परे बरणी।
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई
उरकी जरणी। तुलसी अब राम को दास कहाय
हिये धरु चातक की धरणी। करि हंस को वेष
बड़ो सबसो तजि दे बक बायस की करणी
॥ ३२ ॥ भलि भारत भूमि भले कुलजन्म

समाज शरीर भलो लहिकै। ममता करषा तजिकै बरषा हिम मारुत घाम सदा सहिकै॥ जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै। न तो औरं सबै त्रिष बीज बये हर हाटक कामधुका नहिकै॥ ३३॥ सो सुकृती शुचिमन्त्र सुसन्त सुजान सुशील शिरोमणिस्वै। सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत है ता तनछूवै॥ गुण गेह सनेह को भाजन सों सबहीसों उछाह कहौं भुज द्वै। सति-भाव सदा छल छाँड़ि सबै तुलसी जो रहै रघु-बीर को ह्वै॥ ३४॥ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो। सोई सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सो सुरसाहिब चेरो॥ सो तुलसो प्रिय प्राण समान कहाँ लौं बनाइ कहौं बहुतेरो। जो तजि देह को गेहका नेह सनेहसों रामको होइ सबेरो॥ ३५॥ राम हैं मातु पिता सुत बन्धु औ संग सखा गुरु

स्वामि सनेही । राम कि सौहैं भरोसो है रामको राम रँगी रुचि राचौ न केही ॥ जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहि की गति जेही । सोई जिये जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धरि देही ॥ ३६ ॥ सियराम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीननको जलु है श्रुति राम कथा मुख राम को नाम हिये पुनि रामहि को थलु है ॥ मति रामहि सों गति रामहि सों रति रामसों रामहिको बलु है । सबकी न कहै तुलसी के मते यतनो जगजीवन को फलु है ॥ ३७ ॥ दशरत्थ के दानि शिरोमणि राम पुराण प्रसिद्ध सुन्यो यशमैं । नर नाग सुरासुर याचक जो तुमसों मन भावत पायो नकै । तुलसी कर जोरि करै बिनती जो कृपाकरि दीनदयाल सुनै । जेहि देह सनेह न रावरेसों ऐसी देह धराइकै काहजियै ॥ ३८ ॥ झूठो है झूठो है झूठो सदा जग सन्त कहन्त जे अन्त

लहा है। ताको लहै शठ संकट कोटिक काढ़त दन्त करन्त हहा है॥ जानपनी को गुमान बड़ो तुलसी के बिचार गँवार महा है। जानकी जीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहा है ॥ ३९ ॥ तिनते खर शूकर श्वान भले जड़ता बशते न कहैं कछुवै। तुलसी जेहि रामसों नेह नहीं सो सही बिन पूँछ बिषानन द्वै॥ जननी कत भार मुई दशमास भई किन बाँझ गई किनच्वै। जरिजायसो जीवन जानकिनाथ जिये जग में तुम्हरो बिनु ह्वै ॥४०॥ गजबाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकै सबकै। धरणी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहुँ चाहिय है सुख-स्वै ॥ सब फोटक साटक हैं तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै। जरिजाउ सो जीवन जानकि नाथ जिये जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै ॥४१॥ सुरराज सो राज समाज समृद्धि बिरञ्चिधनाधिप सो धन भा। पवमानसो पावक सो यम सोमसो पूषन सो

भव भूषन भो ।।करि योग समाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो बशहू मन भो । सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकी जीवन को जन भो ।। ४२ ।। कामसे रूप प्रताप दिनेश से सोमसे शील गणेश से माने । हरिचन्द से साँचे बड़े विधि से मघवा से महीप विषै सुखमाने । शुकसे मुनिशारद से बक्ता चिरजीवन लोमश ते अधिकाने । ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम न जाने ।। ४३ ।। भूमन द्वार अनेक मतंग जँजीर जड़े मद अम्बु चुवाते । तोषे तुरंग मनोगति चंचल पौन के गौनहु ते बढ़ि जाते ।। भीतर चन्द्रमुखी अवलोकति बाहर भूप खड़े न समाते । ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै जानकिनाथ के रंग न राते ।। ४४ ।। राज सुरेश पचाशक को विधि के कर को जो पटोलिखि पाये । पूत सपूत पुनीत प्रिया निज सुन्दरता रति को मद नाये ।। सम्पति सिद्धि सबै

तुलसी मनकी मनसा चितवै चित लाये। जानकि जीवन जाने बिना जन ऐसेउ जीव न जीवत जाये ॥४५॥ कृशगात ललात जो रोटिन को, घरबात घरै खुरपा खरिया। तिन सोने के मेरु से ढेर लहे, मन तौ न भर्‍यो घर पै भरिया॥ तुलसी दुख दूनो दशा दुहुँ देखि कियो मुख दारिद को करिया। तजि आस भो दास रघुपति को दशरत्थके दानिदया दरिया ॥४६॥ को भरि है हरिके रितये रितवै पुनिको हरि जो भरिहै। उथपै तेहि को जेहि रामथपै थपिहै तेहि को हरि जो टरिहै॥ तुलसी यह जानि हिये अपने स्वपने नहिं कालहु से डरिहै। कुमया कछु हानि न औरन की जोपै जानकिनाथ मया करिहै ॥ ४७ ॥ ब्याल कराल महाविष पावक मत्त गयन्दन के रद तोरे। शाँसति शङ्कि चली डरपै हुते किङ्कर ते करणी मुख मोरे॥ नेकु बिषाद नहीं प्रहलादहि कारण केहरि केवल होरे।

कौन की त्रास करै तुलसी जोपै राखिहैं राम तौ मारि है कोरे ॥ ४८ ॥ कृपा जेहिकी कुछ काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुख मोरे । करै तिनकी परवाहि का जाहि बिषान न पूँछ फिरै दिन दोरे ॥ तुलसी जेहि के रघुबीर से नाथ समर्थ सो सेवत रीझत थोरे । कहा भवभीर परी तेहि धौं बिचरै धरणी तिन सों तृण तोरे ॥ ४९ ॥ कानन भूधर बारि बयारि महाबिष ब्याधि दवा अरिघेरे । सङ्कट कोटि जहाँ तुलसी सुत मात पिता हित बन्धु न नेरे । राखिहैं राम कृपालु तहाँ हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे । नाक रसातल भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ ५० ॥ जो यमराज रजा-यसु ते मोहिं लै चलिहैं भट बाँधि नटैया । तात न मात न स्वामि सखा सुत बन्धु बिशाल बिपत्ति बटैया ॥ शाँसति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँओर डँटया । एक कृपालुतहाँ तुल-

सी दशरत्थके नन्दनबन्दिकटैया ॥५१॥ जहँ है
यमयातन घोरनदी भट कोटि जलच्चर दन्त टेवैया।
जहँ धार भयङ्कर वार न पार न बोहित नाव
न मीत खेवैया ॥ तुलसी जहँ मातु पिता न
सखा नहिं कोऊ कहूँ अवलम्ब देवैया । तहँ हैं
बिनु कारण राम कृपालु बिशाल भुजा गहि
काढ़ि लेवैया ॥ ५२ ॥ जहँवाँ हित स्वामि न
संग सखा बनिता सुत बन्धु न बाप न मैया ।
काय गिरा मनके जनके अपराध सबै छल
छाँडी क्षमैया ॥ तुलसी तेहि काल कृपालु
बिना दुजो कौन है दारुण दुःख दमैया । सु-
जहाँ सब सङ्कट दुर्घट शोच तहाँ मेरो साहब राखै
रमैया ॥ ५३ ॥ तापस को बरदायक देव सबै
पुनि बैर बढ़ावत बाढ़े । थोरेही कोप कृपा पुनि
थोरेही बैठिकै जोरत तोरत ठाढ़े ॥ ठोंकि बजाय
लियो गजराज कहाँलौं कहौं केहिसों रद काढ़े ।
आरत के हित नाथ अनाथके रामसहाय सही

दिन गाढ़े ॥ ५४ ॥ जप योग बिरागमहामख साधन-दान दया दम कोटि करै । मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञान पुराण पढ़ै तपसानल में युग पुंज जरै । मनसों प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिनादुख कौन हरै ।।५५।। पातक पीन कुदारिद दीन मलीन धरै कथरी करवा है । लोक कहै बिधिहू न लिख्यो स्वपनेहूँ नहीं अपने बर-वाहै ॥ रामको किंकर सो तुलसो समुझे ही भलो कहबो न रवा है । ऐसो को ऐसो भयो कबहूँ न भजे बिनु बानर को चरवाहै ॥ ५६॥ मात पिता जग जाय तज्यो बिधिहूँ न लिख्यो कछु भाल भलाई । नीच निरादर भाजन कादर कूकुर टूकन लागि ललाई ॥ राम सुभाव सुन्यो तुलसी प्रभुसों कह्यो बारक पेट खलाई । स्वारथ को परमारथ को रघुनाथ सो साहेब खोरि न लाई ॥ ५७ ॥ पाप हरै परिताप हरै

तनु पूजि भो हीतल शीतलतोई। हंस कियो बकते बलिजाउँ कहाँलौं कहौं करुणा अधिकाई ॥ काल बिलोकि कहै तुलसी मन में प्रभु की परतीति अघाई। जन्म जहाँ तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई ॥ ५८ ॥ लोग कहैं अरु हौंहुँ कहौं जन खोटो खरो रघुनायक ही को। रावरी राम बड़ी लघुता यश मेरो भयो सुखदायकही को ॥ कै यह हानि सहौं बलिजाउँ कि मोहूँ करो निज लायकही को। आनि हिये हित जानि करो ज्यों हौं ध्यान धरौं धनुशायकहो को ॥ ५१ ॥ आपुहौं आपुको नीके कै जानत रावरो राम भरायो गढ़ायो। कीर ज्यों नाम रटै तुलसी सो कहै जग जानकिनाथ पढ़ायो ॥ सोइ है खेद जो बेद कहै न घटै जन जो रघुबीर बढ़ायो। हौं तो सदा खर को असवार तिहाराई नाम गयन्द चढ़ायो ॥६०॥

* घनाक्षरी *

छारते सँवारिकै पहार हू ते भारी कियो गारो भयो पाँच में पुनीत पच्छ पाइ कै। हौंतौ जैसो तब तैसो अब अधमाई कै कै भरों पेट राम रावरोई गुण गाइकै ॥ आपने निवाजे की पै कीजै लाज महाराज मेरी ओर हेरि कै न बैठिये रिसाइ कै। पालिकै कृपाल ब्याल बाल को न मारिये औ काटिये न नाथ बिषहू को रूप लाइ कै ॥ ६१ ॥ बेद न न पुरान गान जानौं ना बिज्ञान ज्ञान ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता । नाहिंन बिराग योग याग भोग तुलसी के दया दान दूबरो हौं पापहीका पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोष मोसों कौन कलिहू जो सिखिलई मेरिये मलीनता । एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौं रावरे दयालु दीनबन्धु मेरी दीनता ॥ ६२ ॥ रावरो कहावौं गुण गावौं राम

रावरोई रोटी ह्वै हौं पावोंराम रावरीहि कानिहौं। जानत जहान मन मेरेहू गुमान बड़ो मान्यों मैं न दूसरो न मानत न मानि हौं॥ पाँचकी प्रतीति ना भरोसा मोहिं आपनोई तुम अपनाइहौ तबहिं परिजानिहौं। गढ़ि गूढ़ि छीलि छालि कुन्द कैसी भाईं बातैं जैसी मुख कहौं तैसी जीय जब आनिहौं॥ ६३॥ बचन बिकार करत बहु खुआर मन बिगत बिचार कलिमल को निधानु है। राम को कहाइ नाम बेचि बेचि खाइ सेवा संगति न जाइ पाछिले को उपखानु है॥ तेहू तुलसी को लोग भली-भलो कहै ताको दूसरो न हेतु एक नीके को निदानु है। लोक रीति बिदित बिलोकियत जहाँ तहाँ स्वामि के सनेह स्वानहू को सनमानु है॥ ६४॥ स्वारथ को साज न समाज परमारथ को मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है। कै न आयौं करौं न करौंगो करतूति भली

लिखी ना बिरञ्चिहू भलाई भूलि भाल है ॥ रावरी शपथ राम नाम ही की गति मेरे इहाँ झूठो झूठो सो त्रिलोक तिहूँकाल है । तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपालु कीजै ना बिलम्ब बलि पानी भरी खाल है ॥ ६५ ॥ राग को न साज न बिराग योग याग जिय कायर न छाँड़िदेत ठाटिवो कुठाट को । मनो-राज करत अकाज भयो आजु लगि चाहे चारु चोरपै लहै न टूक टाट को ॥ भयो कर-तार बड़े क्रूर को कृपालु अति पायां नाम पारस हौं लालची बराट को । तुलसी बनी है राम रावरे बनाये न तो धोबी कैसो कूकुर न घर को न घाट को ॥ ६६ ॥ ऊँचो मन ऊँचो रुचि भाग नीचो निपटही लोकरीति लायक न लंगर लवारु है । स्वारथ अगम परमारथ की कहाँ चली पेट की कठिन जग जीव को जवारु है ॥ चाकरी न आकरी न खेती न बनिज

भीख जानत न कूर कछु किसिम कबारु है। तुलसी की बाजी राखी राम ही के नाम न तो भेट पितरन सो न मुण्डहू में बार है ॥ ६७ ॥ अपत उतार अपकार को अगार जग जाकी छाँह छुये सहमत ब्याध बाघ को। पातक पुहुमि पालिबे को सहसानन सो कानन कपट को पयोधि अपराध को ॥ तुलसी से बामको भी दाहिनो दयानिधान सुनत सिहात सब सिद्धसाधु साध को। राम नाम ललित ललाम किये लाखन को बड़ो कूर कायर कपूत कौड़ी आध को ॥६८॥ सब अंगहीन सब साधन बिहीन मन बचन मलीन हीन कुल करतूति हौं। बुद्धि बल हीन भावभगति बिहीन दीन गुण ज्ञान हीन हीन भागहूँ बिभूति हौं ॥ तुलसी गरीब की गई बहोर राम नाम जाहि जपि जीय रामहूँ को बैठो धूतिहौं। प्रीति राम नाम से प्रतीति राम नाम की प्रसाद राम नाम

के पसारि पाँय सूतिहौं ॥६९॥ मेरे जानि जबते हौं जीव ह्वै जनम्यों जग तबतें बेसाह्यो दाम लोभ काह कामको । मन तिनहीं को सेव तिनहीं सो भाव नीको बचन बनाइ कहौं हौं गुलाम रामको ॥ नाथहू न अपनायो लोक भूठी ह्वै परी पै प्रभु-हूतें प्रबल प्रताप प्रभु नाम को । आपनी भलाई भलो कीजै तो भलोई न तौं तुलसी को खुलैगो खजानो खोटे दाम को ॥ ७० ॥ योग न बिराग जप योग तप त्याग ब्रत तीरथ न धर्म-जानौं बेद बिधि किमि है । तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है कहूँ शाचैं सब याके अघ कैसे प्रभु क्षमि है ॥ मेरे तौ न डर रघुबीर सुनो साँची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जननि गमि है । भले सुकृती के संग मोहिं तुला तौलिये तौ नामके प्रसादभार मेरी ओर नमि है ॥७१॥ जातिके सुजाति के कुजाति के पेटागिबश खाये टूक सबके बिदित बात दुनी सो । मानस बचन

काय किये पाप सतिभाय रामको कहाय दास दगाबाज पुनी सो ॥ राम नाम को प्रभाव पाउ महिमा प्रताप तुलसीसों जग मानियत महामुनी सो । अतिही अभागो अनुरागत न रामपद मूढ़ ये तो बड़ो अचरज देखि सुनी सो ॥७२॥

जायो कुल मंगन बधायो ना बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनक को। बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार दीन जानत हौं चारि फल चारिहि चनक को ॥ तुलसी सो साहिब समर्थ को सुसेवकहि सुनत सिहात शोच बिधिहू गनक को । नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत गिरी तें गुरू तृणते तनक को ॥७३॥

बेद हू पुराण कही लोकहू बिलोकियत रामनाम ही सों रीझे सकल भलाई है । काशिहू मरत उपदेशत महेश सोई साधन अनेक चितई न चितलाई है । छाँछि को ललात जेते राम नाम के प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई

है। रामराज सुनियत राजनीति की अवधि नाम राम रावरे तो चामकी चलाई है ॥ ७४ ॥
शोच संकटनि शोच संकट परत जर जरत प्रभाव नाम ललित ललाम को। बूड़ियो तरत बिगरियो सुधरति बात होत देखि दाहिनो स्वभाव बिधि बाम को ॥ भागत अभाग अनुरागत बिराग भाग जागत आलसि तुलसीहू से निकाम को। धाइ धारि फिरिकै गोहारि हितकारी होति आई मीच मिटत जपत रामनाम को ॥ ७५ ॥
आँधरो अधम जड़ जाजरो जरा जमन शूकर के सावक ढका ढकेलो मग मैं । गिरो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो हाइ हाइ करत परीगो काल-फँग मैं ॥ तुलसी बिशोक ह्वै त्रिलोकपति लोक गयो नामके प्रताप बात बिदित है जग मैं। सोई रामनाम जो सनेह सों जपत जन ताकी महिमा क्यों कही है जात अगमैं ॥७६॥
जपको न तप खप कियो न तमाई योग याग

न बिराग त्याग तीरथ न तन को । भाई को भरोसो न खरोसो बैर बैरीहू सों बल अपनो न हितू जननी जन को ॥ लोक को न डर परलोक को न शोच देव सेवा न सहाय गर्व धाम को न धन का । रामहीके नाम ते जो होइ सोइ नीको लागै ऐसोई स्वभाव कछु तुलसी के मनको ॥ ७७ ॥ ईश न गणेश न दिनेश न धनेश न सुरेश सुर गौरि गिरापति नहिं जपने । तुम्हरेई नाम को भरासो भव तरिबे को बैठे उठे जागत बागत सोए सपने ॥ तुलसी है बावरो सो रावरोई रावरी सों रावरेहू जानि जिय कीजिये जु अपने । जानकी जीवन मेरे रावरे बदन फेर ठाउँ न समाउँ कहुँ सकल निरपने ॥ ७८ ॥ जाहिर जहानमें जमानो एक भाँति भयो बेंचिये बिबुध धेनु रासभी बेसाहिये । ऐसेउ कराल कलिकाल में कृपालु तेरे नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिये ॥ तुलसी तिहारो

मन बचन करम जन येहू नातो नेह निज और ते निबाहिये। रङ्कके निवाज रघुराज राजा राजनके उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये ॥ ७९ ॥ स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो रामरावरो हौं जानत जहानु है। नाम के प्रताप बाप आजलौं निबाही नीकी आगे को गोसाँई स्वामी सबल सुजानु है ॥ कलि की कुचालि देखि दिन दिन दूनी देव पाहरूई चोर हेरि हिय हहरानु है। तुलसी की बलिबारबारही सम्हार कीबी यद्यपि कृपानिधान सदा सावधानु है ॥ ८० ॥ दिन दिन दूनी देखि दारिद दुकाल दुख दुरित दुराज सुख सुकृत सकोचु है। माँगे पैंत पावत प्रचारि पातकी प्रचण्ड कालकी करालता भले को होत पोचु है। आपने तो एक अवलम्ब अम्ब डिंभयौ समर्थ सीतानाथ सब संकट विमोचु है। तुलसी को साहस सराहिये कृपालुराम नामके भरोसे परिनामु को

निशोचु है ॥ ८१ ॥ मोहमद मात्यो रात्यो कुमति कुनारि सो बिसारि बेद लोकलाज आकरो अचेतु है । भावै सो करत मुख आवै सो कहत कछु काहू की सहत नाहि सरकस हेतु है ॥ तुलसी अधिक अधमाईहू अजामिल ते ताहू में सहाय कलि कपट निकेतु है । जैबे को अनेक टेक एक टेक ह्वैबे की सो पेट प्रिय पूतहित रामनाम लेतु है ॥ ८२ ॥ जागिये न सोइये बिगोइये जनम जाय दिन दुख रोइये कलेश कोह काम को । राजा रङ्क रागीं औ बिरागी भूरि भागी ये अभागी जीव जरत प्रभाव कलिबामको ॥ तुलसी कबन्ध कैसो धाइबो बिचारु अन्ध धुन्ध दीखयत जग शोच परिणाम को । सोइबो जो रामके सनेह की समाधि सुख जागिबो जो जीह जपै नीके राम नाम को ॥८३॥ बरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो त्रासन चकित सो परावनो परोसो है । करम उपासना

कुबासना बिनास्यो ज्ञान बचन बिराग वेष जगत हरोसो है ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग निगम नियोग ते सो कलिहि छरो सो है। काय मन बचन सुभाय तुलसी है जाहि राम नाम को भरोसो ताही को भरोसो है ॥ ८४ ॥

* सवैया *

बेद पुराण बिहाइ सुपन्थ कुमारग कोटि कुचाल चली है। काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ोइ छली है ॥ वर्ण बिभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है। स्वारथ को परमारथ को कलि राम को नाम प्रताप बली है ॥ ८५ ॥ न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटौ। कलि में न बिराग न ज्ञान कहूँ सब लागत फोकट झूठ जटौ ॥ नटज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक

ठाट ठटो। तुलसी जो सदा सुख चाहिये तो रसना निशिबासर राम रटौ ॥ ८६ ॥ दम दुर्गम दान दया मख कर्म सुधर्म्म अधीन सबै धन को। तप तीरथ साधन योग बिराग सो होइ नहीं दृढ़ता तन को॥ कलिकाल कराल में रामकृपा यहै अवलम्ब बड़ो मनको। तुलसी सब संयमहीन सबै यक नाम अधार सदा जन को ॥ ८७ ॥ पाइ सुदेह बिमोह नदी तरणी न लही करणी न कछू को। राम कथा बरणी न बनाइ सुनी न कथा प्रह्लाद न ध्रू को॥ अब जोर जरा जरि गात गयो मनमानी गलानि कुबानि न मूकी। नीक कै ठीक दई तुलसी अवलम्ब बड़ी उर आखर दू को ॥ ८८ ॥ राम बिहाय मरा जपते बिगरी सुधरी कबि कोकिलहू की। नामहि ते गजकी गणिकाहु अजामिल की चलिगै चलचूकी ॥ राम प्रताप बड़े कुसमाज बचाइ रही पति पाण्डु बधू की।

ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दूको ॥ ८९ ॥ नाम अजामिल से खल-तारण तारण बारण बारबधू को। नाम हरे प्रह्लाद विषाद पिता भय शाँसति सागर सूको ॥ नामसों प्रीति प्रतीति विहीन गिलो कलिकाल कराल न चूको। राखिहैं राम सो जासु हिये तुलसी हुलसै बल आकर दूको ॥ ९० ॥

* घनाचरी *

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि बाणिक को बणिज न चाकर को चाकरी। जीविका विहीन लोग सिद्यमान शोचवश कहैं एक एकनसो कहाँ जाइ काकरी ॥ बेदहू पुराण कही लोकहू बिलोकियत साँकरे समै को राम रावरे कृपा करी। दारिद दशानन दबाई दुनी दीनबन्धु दुरित दहत देखि तुलसी हहा करी ॥ ९१ ॥ कुल करतूति भूति कीरति सुरूप गुण यौवन जरत जुर परै न कछू कहो।

राजकाज सुपथ कुसाज भोग रोगहीके बेद बुध
बिद्या पाइ बिबश बलकहीं ॥ गति तुलसीशकी
लखत नहि जो तुरत पबिते करत क्षार पबिसो
पलकहीं । कासों कीजै रोष दीजै काहि पाहि
राम कियो कलिकाल कुलि खलल खलकहीं
॥ १२ ॥ बबुर बहेरे को बनाइ बाग लाइयत
रूँधिबे को सोऊ सुरतरु काटियत है ।
गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचहू को आपने
चना चबाइ चाटियत है । आपु महापात-
की हँसत हरिहरहू को आपु हैं अभागी भूरि
भागी डाटियत है । कलिकी कलुष मन मलिन
किये महत मशककी पाँसुरी पयोधि पाटियत है
॥ १३ ॥ सुनिये कराल कलिकाल भूमिपाल
तुम जाहि घालो चाहिये कहौधौं राखै ताहि
को । हौं तो दीन दूबरो बिगारों ढारों रावरो
न मैं हूँ तैं हूँ ताहिको सकलजग जाहिको ॥
काम कोह लाइकै देखाइयत आँखि मोहिं येते

मान अकस कीबे को आपु आहि को । साहिब सुजान जिन श्वानहू को पक्ष कियो राम बोला नाम हौं गुलाम राम साहिको ॥ १४ ॥

* सवैया *

साँची कहौं कलिकाल करालमें ढारो बिगारो तिहारो कहा है । काम को लोभ को क्रोधको मोहको मोहिं सो आनि प्रपञ्च रहा है ॥ हौं जगनायक लायक आजु पै मेरियो देव कुटेव महा है । जानकीनाथ बिना तुलसी जग दूसरे सों करिहौं न हहा है ॥ १५ ॥ भागीरथी जल पान करौं अरु नाम द्वै रामके लेत नितै हौं । मोसों न लेनो न देनो कछू कलि भूलि न रावरी ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोर करौं परिणाम तुम्हैं पछितैहौं पै मैं न भितैहौं । ब्राह्मण ज्यों उगिल्यो उरगारि हौं त्योंही तिहारेहिये न हितैहौं ॥१६॥ राजमराल के बालक पेलिकै पालत लालत खूसर को । शुचि सुन्दर सालि सकेलि

सुवारि कै बीज बटोरत ऊसर को ॥ गुण ज्ञान गुमान भभेरि बड़ो कल्पद्रुम काटत मूसर को । कलिकाल बिचार अचार हरी नहिं सूझै कछू धमधूसर को ॥ १७ ॥ कीबे कहा पढ़िबे को कहा फल बूझि न बेद को भेद बिचान्यो । स्वारथ को परमारथ को कलिकामद रामको नाम बिसान्यो । बाद विवाद बिषाद बढ़ाइकै छाती पराइ औ आपनि जान्यो । चारिहु को छहुको नव को दश आठ को पाठ कुकाठ ज्यों फान्यो ॥ १८ ॥ आगम बेद पुराण बखानत मारग कोटिन जाहि न जाने । जे मुनि ते पुनि आपुहि आपुको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग बिराग लै जीव पराने । को करि शोच मरै तुलसी हम जानकिनाथ के हाथ बिकाने ॥ ११ ॥ धूत कहौ अवधूत कहो रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ । काहू के बेटा सों बेटा न

ब्याहब काहूकी जाति विगार न सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है रामको जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ । माँगिकै खैबो मसीत को सोइबो लेब को एक न देबे को दोऊ ॥१००॥

* घनाक्षरी *

मेरे जाति पाँति न चहौं काहू की जाति पाँति मेरे कोऊ काम को न हौं काहू के काम को । लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को ॥ अतिही अयाने उपखाने नहिं बूझैं लोग साहेब को गोत गोत होत है गुलाम को । साधु कै असाधु कै भलो के पोच शोच कहा का काहू के द्वार पर्यो जो हौं सो हौं राम को ॥१०१॥ कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बड़ो कोऊ कहै राम को गुलाम खरो खूब है । साधु जानै महासाधु खल जानै महाखल बानी झूठी साँची कोटि उठति हबूब है ॥ चहत न काहू सों कहत

न काहूको कछु सबकी सहत उर अन्तर न ऊन है। तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के राम का भगति भूमि मेरो मति दून है ॥ १०२॥ जागैं योगी जंगम जती जमाति ध्यान धरैं डरे डर भारी लोभ मोह कोह काम के। जागैं राजा राजकाज सेवक समाज साज शोचैं सुनि समाचार बड़े बैरी बाम के॥ जागैं बुध विद्या हित पण्डित चकित चित जागैं लोभी लालच धरणि धन धाम के। जागैं भोगी भोगहि बियोगी रोगी रोगवश सोवैं सुख तुलसी भरोसे एक रामके॥ १०३॥

* छप्पय *

राम मातु पितु बन्धु सुजन गुरु पूजन परम हित। साहेब सखा सहाइ नेह नाते पुनीति चित। देश कोश कुल कर्म धर्म धन धाम धरणि गति। जाति पाँति सब भाँति लागि रामहिं हमारि पति॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ

राम तें सकल फल । कह तुलसिदास अब जब कबहुँ एक राम तें मोर भल ॥ १०४ ॥ महाराज बलिजाउँ रामसेवक सुखदायक । महाराज बलिजाउँ राम सुन्दर सब लायक ॥ महाराज बलिजाउँ राम सब सङ्कट-मोचन । महाराज बलिजाउँ राम राजीव-विलोचन ॥ बलिजाउँ राम करुणायतन प्रणतपालक पातक हरण । बलिजाउँ राम कलिभय विकल तुलसिदास राखिय शरण ॥ १०५ ॥ जय ताड़का सुबाहु मथन मारीच मानहर । मुनिमख रक्षण दक्ष शिला तारण करुणा कर ॥ नृप गण बल मद सहित शम्भु को दण्ड बिखण्डन । जय कुठारधर दर्प दलन दिनकर कुल मण्डन ॥ जय जनक नगर आनन्द प्रद सुख सागर सुषमा भवन । कह तुलसिदास सुरमुकुट मणि जय जय जय जानकिरमन ॥ १०६ ॥ जय जयन्त जय कर अनन्त सज्जन जन रञ्जन । जय विराध बध

विदुष विबुध मुनिगण भय भञ्जन ॥ जयनिशि-
चरो विरूप करन रघुबंश विभूषण। सुभट चतु-
र्दश सहस दलन त्रिशिरा खरदूषण ॥ जय दण्डक
बन पावन करन तुलसिदास संशय शमन।
जग विदित जगत मणि जयति जय जय जय
जय जानकिरमन ॥ १०७ ॥ जय मायामृग-
मथन गीध शबरी उद्धारण। जय कबन्ध-
सूदन बिशाल तरु ताल विदारण ॥ दवन
बालि बलशालि थपन सुग्रीव सन्त हित।
कपि कराऊ भट भालु कटक पालन कृपाल
चित ॥ जय सिय वियोग दुख हेतु कृत सेतु-
बन्ध बारिधि दमन। दशशीश विभीषण
अभयप्रद जय जय जय जानकि रमन ॥१०८॥
कनक कुधर केदार बीज सुन्दर सुरमुनिवर।
सींचि कामधुक धेनु सुधामय पय विशुद्ध तर ॥
तीरथपति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्ष तेहि।
मरकत मणि शाखा सुपत्र मञ्जरी सुलक्षि जेहि ॥

कैवल्य सकल फल कल्पतरु शुभ सुभाव सब सुख बरिस। कह तुलसिदास रघुवंशमणि तौकि होहि तव कर सरिस ॥ १०९ ॥ जाइ सो सुभट समर्थ पाइ रण रारि न मण्डै। जाइ सो यती कहाइ विषय वासना न छराडै। जाइ धनिक बिनु दान जाइ निर्धन बिनु धर्महि। जाइ सो पंडित पढ़ि पुराण जो रत न सुकर्महि ॥ सुत जाइ मातु पितु भक्ति बिनु तिय सो जाइ जेहि पति न हित। सब जाइ दास तुलसी कहै जो न राम पद नेह नित ॥ ११० ॥ को न क्रोध निरदह्यो कामवश केहि नहिं कीन्हों। को न लोभ दृढ़ फन्द बाँधि त्रासन करि दीन्हों ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयन शर। लोचनयुत नहिं भयउ अन्ध श्री पाइ कवन नर ॥ सुर नागलोक महि मण्डलहु को जु मोह कीन्हों जयन। कह तुलसिदास सो ऊबरै जेहि राख राम राजिवनयन ॥ १११ ॥

* सवैया *

भौंह कमान सँधान सुठान जो नारि बिलोकनि बाण ते बाँचे। कोप कृशानु गुमान अवाँ घट ज्यों जिनके मन आँच न आँचे॥ लोभ सबै नटके बश ह्वै कपि ज्यों जग में बहु नाच न नाचे। नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीरके सेवक साँचे॥ ११२॥

* घनाक्षरी *

भेष सुबनाइ भले बचन कहै चुवाइ जाय तौ न जरनि धरनि धन धाम की। कोटिक उपाय करि लालि पालियत देह मुख कहियत गति रामहीके नाम की॥ प्रकटै उपासना दुरावै दुर्बासनाहिं मानस निवासभूमि लोभ मोह कामकी। राग रोष ईरषा कपट कुटिलाई भरे तुलसी से भगत भगति चाहैं रामकी॥ ११३॥ कालिहही तरुणतन कालिहही धरणि धन कालिहही जितौंगा रण कहत कुचालि है।

कालिहही साधौंगो काज कालिहही राजा समाज मोसों कोऊ कहा भारे मही मेरु हालि है ॥ तुलसी यही कुभाँति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घर घालि है । देखत सुनत समुझतहू न सूझै सोई कबहूँ कह्यो न कालहूको काल कालिह है ॥ ११४ ॥ भयो न तिकाल तिहूँलोक तुलसी सो मन्द नीदैं सब साधु सुनि मानो न सकोचुहौं । जानत न योगहिय हानि मानै जानकीश काहे को परेखो हौ प्रपंची पापी पोचुहौं ॥ पेट भरिबे के काज महाराज को कहायो महाराजहू कह्यो है प्रणत बिमोचुहौं । निज अघजाल कलिकालकी करालता बिलोकि होत ब्याकुल करत सोई शोचु हौं ॥ ११५ ॥ धरम के सेतु जग मङ्गल के हेतु भूमिभार हरिबे को अवतार लियो नरको । नीति औ प्रतीति प्रीतिपाल चालि प्रभुमान लोक बेद राखिबे को प्रण रघुबर को ॥ बानर बिभीषणकी

ओर की कनवड़ो है सो प्रसंग सुने अंग जरै अनुचर को। राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि तुलसी तिहारो घरजाइ वाही घरको ॥ ११६ ॥ नाम महाराज के निबाही नीकी कीजै उर सबही सोहात मैं न लोगन सोहात हौं। कीजै राम बार यहि मेरो ओर चपकोर ताहि लगि रंक ज्यों सनेह को ललात हौं ॥ तुलसी बिलोकि कलिकालकी करालता कृपाल को सुभाव समुझत सकुचातहौं। लोक एक भाँति को त्रिलोकनाथ लोक बश आप नो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं ॥११७॥ तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लबार बार बार लालच धरणि धन धाम को। तबलौं बियोग रोग शोग भोग यातना के युग सम लागत जीवन याम याम को ॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन तुलसी है किङ्कर बिमोह कोह काम को। सब दुख आपने निरापने सकल सुख

जौलौं जन भयो न बजाइ राजा राम को ॥ ११८ ॥ तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहाँ तहाँ दुखी जन भाजन कलेश को। तबलौं उबैन पाय फिरत पेटौ खलाय बाये मुँह सहत परामौ देश देश को ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिद को साथरी को सोइबो ओढ़िबो भूने खेश को। जबलौं न भजै जीह जानकी जीवन राम राजन को राजा सो तो साहेब महेश को ॥ ११९ ॥ ईशन के ईश महाराजन के महाराज देवन के देव देव प्रानहूँ के प्रान हौ। कालहू के काल महाभूतन के महाभूत कर्महू के करम निदान के निदान हौ ॥ निगम को अगम सुगम तुलसीहूसे को एते मानशीरु-सिन्धु करुणानिधान हौ। महिमा अपार काहू बोलको न वारापार बड़ी साहिबी में नाथ बड़े सावधानहौ ॥ १२० ॥

* सवैया *

आरतपाल कृपाल जो राम जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े। नाम प्रताप महा महिमा अँकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े॥ सेवक एकते एक अनेक भये तुलसी तिहूँ ताप न डाढ़े। प्रेम बदौं प्रह्लादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढ़े॥ १२१॥ काढ़ि कृपान कृपा न कहूँ पितुकाल कराल बिलोकि न भागे। राम कहाँ सब ठाउँ हैं खम्भ में हाँ सुनि हाँक नृकेहरि जागे॥ बैरी बिदारि भये बिकराल कहै प्रह्लादहिं के अनुरागे। प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे॥१२२॥ अन्तर्यामिहु ते बड़े बाहेर जामि हैं राम जे नाम लिये ते। धावत धेनु पन्हाइ लवाइ ज्यों बालक बोलनि कान किये ते॥ आपनि बूझि कहै तुलसी कहिबे की न बावरि बात बिये ते। पैजु पुरे प्रह्लादहु को प्रकटे प्रभु पाहन ते न

हिये ते ॥ १२३ ॥ बालक बोलि दियो बलि
काल को कायर कोटि कुचाल चलाई । पापी
है बाप बड़े परिताप ते आपनी ओर ते खोरि
न लाई ॥ भूरि दई बिष मूरि भई प्रहाद सुधाई
सुधा की मलाई । राम कृपा तुलसी जनको जग
होत भले को भलाई भलाई ॥१२४॥ कंस करी
ब्रजबासिन पै करतूति कुभाँति चली न चलाई ।
पांडु के पूत सपूत कपूत सुयोधनभा कलि छोटो
छलाई ॥ कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल
खेचर खीस खलाई । ठीक प्रतीति कहै तुलसी
जग होई भले को भलाई भलाई ॥ १२५ ॥
अवनीश अनेक भये अवनी जिनके डरते सुर
शोच सुखाहीं । मानव दानव देव सतावन
रावनघाटि रच्यो जगमाहीं ॥ ते मिलये धरि
धूरि सुयोधन जे चलते बहु छत्र कि छाहीं ।
बेद पुरान कहै जग जान गुमान गोबिंदहि भा-
वत नाहीं ॥ १२६ ॥ जब नैनन प्रीति ठई

ठग श्यामसों स्यानी सखी हठिहौं बरजी। नहिं जानो वियोग सुरोग है आगे झुकी तबहूँ तेहि सों तरजी॥ अब देह भई पट नेह के घाले सो ब्योंत करै बिरहा दरजी। ब्रजराज कुमार विना सुनु भृंग अनंग भयो जिय को गरजी॥ १२७॥ योगकथा पठई ब्रजको सब सो शठचेरी की चाल चलाकी। ऊधोजू कौन कहै कुबरी जो बरी नटनागर हेरिहलाकी॥ जाहि लगै परि जानै सोई तुलसी सो सोहागिनि नन्दललाकी। जानी हैं जानपनी हरिकी अब बांधियेगी कछु मोट कलाकी॥ १२८॥

* घनाक्षरी *

पठयो है छपद छबीले कान्ह केहू कहूँ खोजिकै खवास खासो कूबरी सी बालको। ज्ञालको गढ़ैया बिनु गिराको पढ़ैया बार खालको कढ़ैया सो बढ़ैया उरशाल को॥ प्रीतिको बधिक रसरीति के अधिक नीति निपुण विवेक है निदेश

देशकालको । तुलसी कहे न बनै सहेही बनैगो सब योग भयो योगको बियोग नन्दलाल को ॥ १२९ ॥ हनुमान ह्वै कृपाल लाड़िले लषणलाल भावते भरत कीजै सेवक सहायजू । बिनती करत दीन दूबरो दयावनो सो बिगरे ते आपुही सुधारिलीजै भायजू ॥ मेरी साहिबिनी सदाशीशपर बिलसति देवी क्यों न दास को देखाइयत पायजू । खीझहूमें रीझिबे की बानि राम रीझत हैं रीझे ह्वै हैं रामको दोहाई रघुरायजू ॥ १३० ॥

* सवैया *

बेष बिराग को राग भरो मन माय कहौं सतिभावहौ तोसों । तेरेहीनाथ को नाम लै बेचिहौं पातकी पामर प्राणनि पोसों ॥ येते बड़े अपराधी अघाकहँ तैं कहुँ अम्बकि मेरो तू मोसों । स्वारथ को परमारथ को परिपूरण भो फिरि घाटि न हो सों ॥ १३१ ॥

* घनाक्षरी *

जहाँ बालमीकि भयेब्याधते मुनीन्द्र साधु मरामरा जपे सिख सुनि ऋषिसातकी। सीयको निवास लवकुश का जनम थल तुलसी छुवत छाँह ताप गरै गातकी ॥ बिटप महीप सुरसरित समीप सोहै सीतावट पेखत पुनीत होत पातकी। बारपुर दिग पुर बीच बिलसति भूमि अंकित जो जानकी चरण जल जातकी ॥ १३२ ॥ मरकत बरन परन फल मानिक से लसै जटाजूट जनु रूप वेषहरु है। सुषमा को ढेरु कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं सम्पदा सकल मुद मंगल को घरु है ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइये प्रतोत मानि तुलसी बिचारि काको घरु है। सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै रामरमनी को बट कलि कामतरु है ॥ १३३ ॥ देवधुनी पास मुनिबास श्री निवास जहाँ प्राकृतहू बट बूट बसत पुरारि हैं। योग जप योग को बिराग को

पुनीत पीठि रागिन पै सीठि दोठि बाहरी निहारि हैं ॥ आयसु आदेश बाबू भलो भलो भाव सिद्धि तुलसी बिचारि योगी कहत पुकारि हैं। राम भगतन को तो काम तरु ते अधिक सीय बट सेये करतल फल चारि हैं ॥ १३४ ॥ जहाँ बन पावनो सुहावने बिहँग मृग देखि अति लागत अनंद खेत खूटसो । सीता राम लषग निवास-बास मुनिन को सिद्ध साधु साधक सबै बिवेक बूटसो ॥ झरना झरत झारि शीतल पुनीत बारि मन्दाकिनि मंजुल महेश जटाजूट सो। तुलसी जो रामसों सनेह साँचो चाहिये तो सेइये सनेहसों विचित्र चित्रकूट सो ॥ १३५ ॥ मोहवन कलिमल पल पीन जानि जिय साधु गाइ बिप्रन के भयको निवारि है। दीन्ही है रजाय राम पायसो सहाय लाल लषण समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है ॥ मन्दाकिनि मञ्जुल कमान असि बाण जहाँ बारि धार धीर धरि

सुकर सुधारि है। चित्रकूट अचल अहेरी बैठ्यो घातमानो पातक के ब्रात घोर शावक संहारि है॥ १३६॥

* सवैया *

लागि दवारि पहार ढही लहकी कपि लंक खरखोकी। चारुचुवा चहुँ ओर चलीं लपटैं झपटैं सो तमीचर तोकी॥ क्यों कहिजात महा सुखमा उपमा तकि ताकत हैं कवि कोकी। मानो लसी तुलसी हनुमान हिये जगजोतजराय की चोकी॥ १३७॥ देव कहैं अपनी अपनी अवलोकन तीरथराज चलोरे। देखि मिटैं अपराध अगाधनि मज्जत साधुसमाज भलोरे॥ सोह सितासितको मिलिबो तुलसो हुलसै हिय हेरि हलोरे। मानो हरे तृण चारु चरैं बगरैं सुरधेनु के धौल कलोरे॥ १३८॥ देवन दीन कहँ जो जन जान किये मनसा कुल कोटि उधारे। देखि चलैं झगरैं सुरनारि सुरेश बनाइ बिमान

सँवारे ।। पूजा को साज विरञ्चि रचैं तुलसी जे महातम जाननहारे । ओककी नीव परो हरि-लोक बिलोकत गङ्ग तरङ्ग तिहारे ॥ १३९ ॥ ब्रह्म जो व्यापक वेद कहै गमनाहिं गिरा गुण ज्ञान गुनी को । जो करता भरता हरता सुरसाई सुसाहिब दीन दुनी को ॥ सोई भयो द्रव रूप सही जाहै नाथ बिरंचि महेश मुनी को । मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देव धुनी को ॥ १४० ॥ बारि तिहारो निहारि मुरारि भये परसे पद पाप लहौंगो । ईश ह्वै शीश धरोपै डरौं प्रभुकी समता बड़ दोष दहौंगो । बरु बारहिं बार शरीर धरौं रघुबीर को ह्वै तवतीर रहौंगो । भागीरथी बिनवौं करजोरि बहोरि न खोरि लगौ सो कहौंगो ॥ १४१ ॥

* घनाक्षरी *

लालची ललात बिललात द्वारद्वार दीन वदन मलीनमन मिटैन बिसूरना । ताकत सराधकै विवाह

कै उछाह कछु डोलै लोल बूझत शब्द ढोल तूरना ॥ प्यासे न पावहिं बारि भूखे न चनक चारि चहत अहारते पहार डारि घूरना । शोकको-अगार दुखभार भरो तौ लौं जन जौलौं देवी द्रवै न भवानी अन्नपूरना ॥ १४२ ॥

* छप्पय *

भस्म अंग मर्दन अनंग सन्तत असंग हर । शीशगंग गिरिजाऽर्धंग भूषणभुजंगवर ॥ मुंड माल बिधुबाल भाल डमरू कपाल कर । त्रिबुध-बृन्द नवकुमुदचन्द सुखकन्द शूलधर ॥ त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग बसन बिष भोजन भव भयहरण । कहे तुलसिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शंकर शरण ॥१४३॥ गरल अशन दिग बसन व्यसन भञ्जन जनरञ्जन। कुन्द इन्दु कर्पूर गौर सच्चिदानन्द घन ॥ विकट वेष उर शेष शीश सुरसरित सहज शुचि । शिव अकाम अभिराम धाम नित रामनाम रुचि ॥ कन्दर्पदर्प दुर्गम

दमन उमारमण गुणभवन हर । त्रिपुरारि त्रि-
लोचन त्रिगुण पर त्रिपुर मथन जय त्रिदशवर
॥ १४४ ॥ अर्द्धाङ्ग अंगना महा नाम योगीश
योगपति। विषम अशन दिगवसन नाम विश्वेश
विश्वगति ॥ कर कपाल शिर माल व्याल
विष भूति विभूषण । नाम शुद्ध अविरुद्ध
अमर अनवद्य अदूषण ॥ विकराल भूत बैताल
प्रिय भीमनाम भवभय दमन । सब विधि समर्थ
महिमा अकत्थ तुलसिदास संशय शमन॥१४५॥
भूतनाथ भयहरण भीम भय भवन भूमिधर ।
भानुमन्त भगवन्त भूतिभूषण भुजंग वर ॥
भव्य भाव बल्लभ महेश भव भार बिभञ्जन ।
भूरि भाग भैरव कुयोग गञ्जन जनरंजन ॥
भारतीबदन बिष अदन शिव शशि पतंग पावक
नयन । कहै तुलसिदास किन भजसि मन
भद्र सदन मर्दन मयन ॥ १४६ ॥

* सवैया *

नाँगो फिरै कहै माँगनो देखि न खाँगो कछू जनि माँगिये थोरे । राँकनि नाकप रीझि करै तुलसी जग जो जुरै याचक जोरे ॥ नाक सँवारत आयो हौं नाकहि नाहिं पिनाकिहि नेकु निहोरे । विरञ्चि कहै गिरिजा सिखवौ पति रावरो दानिहैं बावरे भोरे ॥ १४७ ॥ विष पावक ब्याल कपाल गरे शरणागत तौं तिहुँपाप न डाढ़े । भूत बैताल सखा भव नाम दलै पल में भवके भय गाढ़े ॥ तुलसीश दरिद्र शिरोमणि सो सुमिरे दुख दारिद होहिं न ठाढ़े । भौन में भाँग धतूरोइ आँगन नाँगे के आगे हैं माँगने बाढ़े ॥ १४८ ॥ शीश बसै बरदा बरदानि चढ़्योबरदा घरन्यो बरदा है । धाम धतूरो विभूतिको कूरो निवास तहाँ शव लै मरदा है ॥ ब्याली कपाली है ख्याली चहूँदिशि भाँगकि टाटिन्हको परदा है । रंक शिरोमणि काकिनिभाक

विलोकत लोकपको करदा है ॥ १४९ ॥ दानि जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूँपुर में शिर टीको। भोरो भलो भले भाव को भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसी को ॥ ता बिन आशको दास भयो कबहूँ न मिट्यो लघुलालच जी को। साधो कहा करि साधन ते जो पै राघो नहीं पतिपारबती को ॥ १५० ॥ जाते जरे सब लोक बिलोकि त्रिलोचन सो विष जोकि लियो है। पान कियो विष भूषण भो करुणा बरुणालय साइँ हियो है ॥ मेरोइ फोरिबे योग कपार किधौं कछु काहू लखाइ दियो है। काहे न कान करौं बिनती तुलसी कलिकाल बिहाल कियो है ॥ १५१ ॥

* घनाच्चरो *

कालकूट भयो अजर अमर तन भवन मशान गथ गाठरी गरद की। डमरू कपाल कर भूषण कराल ब्याल बावरे बड़े की रीझ

बाहन बरद की ॥ तुलसो बिशाल गोर गात बिलसत भूति मनों हिमगिरि चारु चाँदनी शरदकी । अर्थ धर्म काममोक्ष बसत बिलोकनि में काशी करामति योगी जागती मरदकी॥ १५२॥ पिंगल जटा कपाल माथे पै पुनीत आप पावक नैना प्रताप भ्रू पर बरत हैं । लाचन विशाललाल सोहै बालचन्द्रभाल कण्ठ काल कूट ब्याल भूषण धरत हैं ॥ देत न अघात रीझ खात पात आकहीके भोलानाथ योगी जब औढर ढरत हैं । सुन्दर दिगम्बर विभूति गात भाँग खात रूरे शृंङ्गीपूरे काल कंटक हरत हैं ॥ १५३ ॥ देत सम्पदा समेत श्री निकेत याचकनि भवन-विभूति भाँग वृषभ बहनु है । नाम बामदेव दाहिनो सदा असंग रंग अरधंग अँगना अनङ्ग को महनु है ॥ तुलसी महेशको प्रभाव भावही सुगम अगम निगमहू की जानिबो गहनु है । भेष तो भिखारी को भयङ्कर हैं शंकर दयालु

दीनबन्धु दानो दारिद दहनु है ॥ १५४ ॥ चाहै न अनङ्ग अरि एको अंग माँगने को देबोइ पै जानिये सुभाव सिद्ध बानिसो । बारिबुन्द चारि त्रिपुरारि पर डारिये तौ देत फलचारि लेत सेवासाँची मानिसो ॥ तुलसी भरोसो न भवेश भोलानाथको तो कोटिक कलेश करो मरो क्षार छानिसो । दारिद दवन दुख दोष दाह दवानल दुनी न दयालु दूजो दानिशूलपानिसो ॥ १५५ ॥ काहे को अनेक देव सेवत जागै मशान खोवत अपान शठ होत हठि प्रेतरे ॥ काहे को कोटी उपाय करत मरत धाय याचत नरेश देश देश के अचेतरे ॥ तुलसी प्रतीति बिनु त्यागे तो प्रयाग तनु धनहीं के हेतु दान देत कुरुखेतरे । पातद्ध धतूर के हैं भोर कै भवेश सों सुरेशही की सम्पदा सुभाय सो न लैतरे ॥ १५६ ॥ संघट-गैयंद बाजिराज भले भले भट धनधाम निकर करनिहूँ न पूजैकै । बनिता बिनीति पूत पावन

सोहावन औ बिनय विवेक विद्या सुभग शरीरवै॥ इहाँ ऐसो सुख परलोक शिवलोक ओक ताको फल तुलसी सो सुनो सावधान है। जाने बिनु जाने कै रिसाने केलि कबहुँक शिवहि चढ़ाये है है बेलके पतौआ द्वै ॥ १५७ ॥ रतिसी रवनि सिंधु मेखला अवनिपति औनिप अनेक ठाढ़े हाथ जोरि हारिकै। सम्पदा समाज देखि लाज सुरराजहू के सुख सब बिधि विधि दीन्हे हैं सँवारिकै ॥ इहाँ ऐसो सुख सुरलोक सुर-नाथपद ताको फल तुलसी सो कहैगो विचारि कै। आक के पतौआ चारि फूलहू धतूरे के द्वै दीन्हे है हैंबारक पुरारि पर डारिकै।।१५८।। देवसरि सेवो बामदेव गाँव रावरेही नाम रामही के माँगि उदर भरतहौं। दीबेयोग तुलसी न लेतकाहू को कछुक लिखी न भलाई भाल पोच न करत हौं॥ येतेहू पर कोऊ जो रावरो है

जोर करै ताको जोर देवदीन द्वारे गुदरत हौं। पाइके उराहनो उराहनो न दीजै मोहि कालिकाला काशीनाथ कहे निवरत हौं ॥१५९॥ चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरो हर पाँय तर आय रह्यों सुरसरी तीरहौं। वामदेव रामको स्वभाव शील जानियत नातो नेह जानि जिय रघुबीर भीर हौं॥ अधिभूत बेदन विषम होत भूतनाथ तुलसी विकल पाहि पचत कुपीरहौं ॥ मारिये तौ अनायास काशीवास खासफल ज्याइये तौ कृपाकरि निरूज शरीरहौं ॥ १६० ॥ जीवेकी न लालसा दयालु महादेव मोहिं मालुम है तोको मरबेई को रहत हौं। कामरिपु रामके गुलामन को कामतरु अवलम्ब जगदम्ब सहित चहत हौं॥ रोग भयो भूतसो कुसूत भयो तुलसी को भूतनाथ पाहि पद पंकज गहत हौं। ज्याये तो जानकी जीवन जन जानि जिय मारिये तो माँगी मीच सुधि ये कहत हौं॥१६१॥भूतभव भवति पिशाच

दूत प्रेत प्रिय आपनो समाज शिव आपु नीके जानिये । नाना वेष बाहन विभूषण बसन बास खानपान बलि पूजा बिधिको बखानिये ॥ राम के गुलामन की रीति प्रीति सूधी सब सबसों सनेह सबही को सनमानिये । तुलसी की सुध-रै सुधारे भूतनाथ ही के मेरे माय बाप गुरु शंकर भवानिये ॥ १६२ ॥ गौरिनाथ भोला-नाथ भवत भवानीनाथ बिश्वनाथपुर फिरि आन कलिकाल की । शंकर से नर गिरिजा सी नारी काशीबासी बेद कहो सही शशि शेखर कृपाल की ॥ छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग बिकल बिलोकियत नगरी बिहाल की । पुरी सुरबेलि केलि काटत किरातकलि निठुर निहारिये उघारि डीठि भाल की ॥१६३॥ ठाकुर महेश ठकुराइनि उमासी जहाँ लोक बेदहु बिदित महिमा ठहरकी । भट रुद्रगण पूत गण-पति सेनापति कलिकाल की कुचाल काहु

ता न हरकी ॥ बसी विश्वनाथ की विषाद बड़ो वाराणसी बूझिये न ऐसो गति शंकर शहरकी । कैसी कहै तुलसी वृषा सुरके बरदानि बानि जानि सुधा तजि पियनि जहरकी॥१६४॥ लोक वेदहु विदित वाराणसी की बड़ाई बासी नरनारी ईश अम्बिका सरूप हैं । कालनाथ कोतवाल दण्डकारी दण्डपाणि सभासद गणपसे अमित अनूप हैं ॥ तहउँ कुचाल कलिकाल की कुरीति कैधौं जानत न मूढ़ इहाँ भूतनाथ भूपहैं । फलै फूलै फैलै खल सीदैं साधु पल पल बाती दीपमालिका ठठाइयत सूपहैं ॥१६५॥ पंचकोश पुण्यकोश स्वारथ परारथ को जानि आपु आपने सुपास बास दियो है । नीच नर-नारि न सँभारिसके आदर लहत फल कादर बिचारि जो न कियो है ॥ बारी वाराणसी बिनु कहे चक्र चक्रपाणि मानि हितहानिसो मुरारि मन भियो है । रोष में भरोसो एक आशुतोष कहि जात

बिकल बिलोकि लोक काह कूट पियो है ॥१६६॥
रचत बिरंचि हरि पालत हरत हर तेरेहि प्रसाद
जग अगजग पालिके। तोहिं में बिकास बिश्व
तोहिं में बिलास सब तोहिं में समातु मातु
भूमिधर बालिके ॥ दीजै अवलंब जगदंब न
बिलंबकीजै करुणा तरंगिनी कृपा तरंग मालिके।
रोष महामारी परितोष महतारी दुनि देखिये
दुखारी मुनि मानस मरालिके ॥ १६७ ॥
निपट बसेरे अघ औगुण घनेरे नर नारिउ
अनेरे जगदंब चेरी चेरे हैं। दरिदि दुखारी
देखि भूसुर भिखारी भीरु लोभ मोह काम कोह
कालमल घेरे हैं ॥ लोकरीति राखी रामसाखी
बामदेव जानि जनकी बिनती मानि मातु कहि
मेरे हैं। महामारी महेशानी महिमा की खानी
माद मंगल की राशी काशी बासो दास तेरे
हैं ॥ १६८ ॥ लोगन को पापकैधौं सिद्ध सुर-
शाप कैधौं काल के प्रताप काशी तिहूँ ताप

तई है । ऊँचे नीचे वीच के धनिक रंक राजा राय हठनि बजाइ करि डीठि पीठि दई है ॥ देवता निहोरे महामारीन्ह सो करजोरे भोरा-नाथ जानी भोरे आपनीसी ठई है । करुणा निधान हनुमान बीर बलवान यशराशि जहाँ तहाँ तैंही लूटि लई है ॥ १६६ ॥ शङ्कर शहर सर नारि नर बारिचर बिकल औ महा मारि महा माँज भई है । उछरत उतरात हहराति मरिजात भभरि भगात जल थल मोच मई है ॥ देव न दयाल महिपाल न कृपाल चित बारा-णसी बाढ़त अनीति नितनई है । पाहि रघुराज-पाहि कपिराज रामदूत रामहू कि बिगरी तैंहीं सुधारि लई है ॥ १७० ॥ एकतो कराल कलि काल शूल मूल तामें कोढ़ में की खाजसी शनीचरी है मीनकी । बेदधर्म दूरिगये भूमि चोर भूप भये साधु सिद्धमानजान बीये पापपीनकी ॥ दूबरे को दूसरो न द्वार राम दयाधाम रावरेई

गति बलि विभव विहीन की । लागैगी पैलाज वा विराजमान विरदहि महाराज आज जो न देत दान दीन की ॥ १७१ ॥ राम नाम मातु पितु स्वामी समरथहितु आस रामनामको भरोसो राम नाम को । प्रेम रामनामहीसों नेम राम नामही को जानो न मरम पग दाहिनो न बाम को ॥ स्वारथ सकल परमारथको राम नाम राम नाम हीन तुलसी न काहू काम को । राम की शपथ सरबसु मेरे रामनाम कामधेनु कामतरु मोसे क्षीनछाम को ॥ १७२ ॥

* सवैया *

मारग मारि महीसुर मारि कुमारग कोटिक कै धन लीयो । शङ्कर कोपसों पापको दामपरीक्षित जाहिगो जारिकै हीयो ॥ काशी में कंटक जेते भये ते गे पाइ अघाइ कै आपनो कीयो । आजुकि काल परौं कि नरौं जड़ जाहिंगो चाटि देवारी को दीयो ॥ १७३ ॥ कुंकुम अङ्ग सों

रंगजितो मुख चन्द कि चन्दसों होड़परी है। बोलत बोल समृद्धिचुवै अवलोकत शोच विषादहरी है। गौरीको गङ्ग विहंग निवेष कि मंजुल मूरति मोद भरी है। पेखिसप्रेम पयानसमे सब शोच विमोचन क्षेमकरी है ॥ १७४ ॥

* घनाक्षरी *

मंगलकीराशि परमारथकी खानि जानिविरची बनाइ विधि केशव बसाई है। प्रलयहू काल राखी शूलपाणि शूलपर मोचबस नीच सोउ चाहत खसाई है ॥ छाँड़ि क्षितिपाल जो परीक्षित भये कृपाल भयो यो खलको कोई किनि सो नसाई है। पाहि हनुमान करुणानिधान राम पाहि काशी कामधेनु कलिकुहत कसाई है ॥ १७५ ॥ बिरची विरञ्चिकी बसत विश्वनाथकी जो प्राणहूँत प्यारी पुरी केशव कृपाल की। ज्योतिरूप लिङ्गमयी अगणित लिङ्गमयी

मोक्ष बितरनि बिदरनि जगजाल की ॥ देवी देव देवसरि सिद्ध मुनिवर बास लोपति विलोकत कुलिपि भोड़े भाल की । हाहा करै तुलसी दयानिधान राम ऐसी काशी की कदर्थना कराल कलिकाल की ॥ १७६ ॥ आश्रम बरण कलि बिवश विकल भये निज निज मरयाद मोटरीसी डारदी । शङ्कर सरोष महा मारि हिते जानियत साहिब सरोष दुनी दिन दिन दारदो ॥ नारि नर आरत पुकारत सुनै न कोऊ काहू देवतनि मिलिमोटी मूठी मारदी । तुलसी सभीत पाल सुमिरे कृपालु राम समय सकरुणा सराहि सनकारदी ॥ १७७ ॥

इति श्रीगोसाईंतुलसीदासकृत कवितावली रामायण समाप्त ॥

बाबू कैलासनाथ भार्गव द्वारा, भार्गवभूषणप्रेस, काशीमें मुद्रित ।

S.K.

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

रामायण

भाषा टीका

टीकाकार-लखीमपुरनिवासी पं० नारायणप्रसाद मिश्र।

गुसाईंजी की जीवनी, रामायण माहात्म्य, हनुमान-चालीसा, बजरंगबाण, रामकलेवा, रामशलाका प्रश्न और कठिन शब्दार्थ तथा विस्तृत भाषा-टीका से विभूषित।

महोदय!

यह वेद-शास्त्रादि का निचोड़ प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रामायण' मेरे पुस्तकालय से अनेक आकारों में छोटे बड़े हर मेल के टाइपों से बढ़िया कागज पर सुन्दर रंग-बिरंगे चित्रों से आभूषित होकर मूल, मानस, भाषा-टीका आदि कई प्रकार से बहुत शुद्धतापूर्वक नवाह्निक, मासिक पाठ सहित तैयार किया गया है।

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी।